

आग्निनाथाय नमः
सूरि आत्मधाम गुरुभ्यो नमः

मो न वे र्ता

अनुक

पू प श्री प्रतीणामिजयजी गणितर

संस्कृत

पू मुनिराज श्री महिमाविनयजी महाराज

अनुवादक

रत्न परमार

रा भा 'कोविट' तथा हि शिक्षक 'सनद'

धार ३ २४८०

वि म २०१०

मूल्य

पठो पाठो

हिन्दी आवृत्ति

प्रति २०००

प्रकाश एव प्राप्तिम् -

भद्रा कालिदास रायचन्द्रभाद्र

सु भाद्र ५१०० अश्विनी - अमदावाद

हो आनकी टोफीट भननेपर पुनः

नट सिंगी ।

शाह तागजी गमनानी गममनयाला

रविसार वेठ पूरा २ की तरफन नम भ

हा- हमराय ताराणी

मुद्रा

भा गा प नन

राष्ट्रभाषा प्रिंटिंग प्रेम, लि

३६८ सदाशिव पठ पुन २

नि त्रे द न

हम देख रहे हैं कि आज हमारे आरों आर स्तर, द्रव, अनीति, ज्ञानीयता आदिका बाजार गर्म हो रहा है । मानव ज मका प्रधान हनु अपना तथा अपना बहुभोजी उत्तमि मौक्तिक और आधिभौतिक करना, ज्विन आज तो इनक विरात मानव ही मानवका उत्रु बन ममस्त विश्वका मार्गो सहार करने पर ही तुगा हुआ है । एक दूसका गला घाटनके साधन आधकाधिक मधामें लुगना ही उनके जानका आय हनु बना, दृष्टिगावर हा रहा है । विश्व भर मिाग तथा सहारकी एक रगभूमि मात्र बनके रह गया है । अब तक मानवने अपने कन्यागार्थ ना कुछ निधियों ना तत्व समदित किये थे व सब एकरे पथत् एक पिप्पल होते दिखाई दे रहे हैं । प्रम, सहानुमृति, त्याग, बहुत्व आदि गुणोंका दुनिवासे दिन ब दिन लप होता जा रहा है । यही परिस्थिति याद और कुछ दिन यों ही बनी रहगी तो निश्चय ही मनुष्य और पशुमें काह अंतर न रहेगा ।

लेकिन भवानक अघ पातसे पतित होती मानव जातिको बचाया जा सकता है । वैसा देखा जाई तो

प्रत्येक मानव अपना तथा अन्यका गिर क'दाग करना चाहता जरूर है, लेकिन उसमें रही असम्माननाम्ही विद्याविना उस नियमनि पीठेही आर ली'ती रहती है । धार्मिक ग्राहिक गुण व समाधानके लिए मानव आनंका सवनागरी गरी गार्हिमें गिरा देनेके लिए सदा यत्न रहता है । किंतु आज तक धर्म सम्पत्ति तथा प्रशास्कों मानव जातिका यह आर पाठ रोचनका सफल प्रयास किया है । जिसमें जैन धर्मक तर तथा सद्गोका भी असाधारण स्थान है । भाग्यवाधम आज भी अपने सस्यारक गुणादिताय भा यूपमद्वय कं वदुमूय सदा तथा सनुपदेशक प्रशास्के मानव जातिका स मागपर लानेमें प्रुगवस सशाम्भूत बन सकता है ।

ज्ञान-साक्षि भव तक वदुनाम्हले गुजरतीमें प्रकाशित होने पाया है । यह दिगीम, अधिक मात्रामे प्रकाशित होनेसे भारत वपकी अमलर जाता तक पहुँच सकेगा । हम उम्हय वश ही 'मानवता' को दि'दी वेषाकमें सुसज्जित कर पाठकोंक समग्र रचनेकी चेज कर रहा हूँ ।

'मानवता' यह प्रात स्मरणीय, वधि कुल किरीट पुन आनाय दव भी विनय लधिसूरीधरनीने भम भिनी दशमदण गिथ रत्न पुन वयोधप्रवर

श्री प्रवीण विनयजी द्वारा गुजराती भाषामें लिखित ' अतरनी अग्याळो ' के कुछ छल्लोंकी शलक हैं । जिसका इसक पूर्व मराठी भाषामें भा. यगल्वी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है । गिद्दार लेखकी लदे असेल यह मनाया भी कि कल्पित उपयोगी लेखोंका अनुवाद हर प्रांतीय भाषामें हो ताकि भिन्न प्रांतीय जन तथा जनतर इसका मनन कर अपन दूषित जीवनमें उतार, सयोगसे पाये साधन-जमकी मफल बांधें । हिंदी भाषामें अनुवाद कराकी इच्छा कई सज्जनोंन पूज्यभीष्टे समर प्रकट की । लेकिन अनुवाद करनेका सुभवसर मुझे मिला, जिसे मैं अपना साभाग्य समझता हूँ ।

इसका सुसंवादन पूज्य मुनिराव भी महिमा विनयजीने दिया है, जो स्वयं विद्वान् लेखकभीके भिन्नी शिष्य है । इनक संपादन-साध्यताका पता तो पाठकको उस समय लगना जब वह ' मान्यता ' का आदिमें अतक पड़ेगा ।

इस पुस्तकके लिये महाराष्ट्रक मुप्रसिद्ध साहित्यिक इतिहास तथा शिक्षण तज साज्जीय श्री दत्तो वामन पातदारजीन अपनी बहुमूल्य समति देकर जो सदानु भति प्रकट की है, उसके लिय मैं उन्हा तत्पत शर्णी हूँ ।

❁ अभिनदन ❁

श्री माणिकचंद यनाचा राजाची मयरा

—पूना वेंच

श्री ताराचंद कपूरचंद रामसनघाला

धताळ पठ पूना ८

श्री गम मंदस

भवानी पठ, पूना ८

श्री भनूतमल लीलाचंद काल्यावाला

२१२ रजिदर पेठ, पूना ८

श्री ताराची गमनाची रामसनघाला

रजिदर पठ, पूना ८

चि होन दशनाम त प प म श्री प्रवीण
विनयना द्वारा शुचगतीस लिखित 'अतरना
अनरागा' के चुने हुए लघुकाहिनी भाषाम
'मानसता' रूप रत्नमे प मुनिश्रीमहिमाविनयना
म प्ररणा या आविक महायना ग्रन्थन का ।

रजन परमार

जैन भाषियाव त्रिय 'भानरता' यद् ओगी
 कितार अरुण्ड उग्रशपद प्रवीण हागी । रि ।
 अनेनियोकु त्रिय, हा समे भक्ति मिद्वन्ति
 विगारणीय जोर मनोय हागे । कर्ता हि सव
 सद्धर्मोका गुण्य मिद्वन्ति सत्यप्रम पर ही निधा-
 मत रहता है ।

कारिक यत् ७।१८७५ }
 पुणे

दत्ता यामन पातदार

कर-कमलोमे



विशाधनग्री सरस्वती जिनकी जिह्वापर निश
ग्नि निवास करती है और वस्तुत्वशक्ति जिनकी
चेरी है।



जो विश्वकी अदि मिदियासे पर निमय
ज्ञात पुस्तके सन्देशसे अमिष्ट विश्वमें मानवता
का प्रचार करनेका अहर्निश वाय बरने रहते हैं ।

उमे

व्याकरण, काव्य, काश, पञ्दर्शन, न्याय,
व्योतिष शास्त्रके मर्मज्ञ पूज्य आपादयेश

श्री विजय लन्धिमुरीधरजी महागन

—के करकमलौम ज्ञतज्ञ अनुबदना सहित
'मानवता' सादर समर्पण ।

विनीत

रचन परमार

भूमिका

मानवता के लिये भी मानवकी भूमिका की आवश्यकता होगी यह मन कभी सोचा भी न था। सिन्धु भाजी रजन परमारने यह माप की कि म मानवताकी भूमिका कितनी है। जरा विचार हुआ तो जूहाम तारम स्वीकृत हो ली। यह सब कुछ ठीक हुआ, पर म स्वयं अममजसमे है कि मानवताकी भूमिका ही क्या लिखें ? यह तो मानवकी अपनी चीज है—मानवका स्वभाव है और अस्तित्व गति भी। जहाँ पगबंद असफल होता है वहाँ मानवता सफल होती है परन्तु आजका मानव तो अपनेको ही भूला हुआ है—यह मानवताकी क्या जाने ? यह मनीष युगका प्राणी है—भौतिकवादका पुजारी है। अमने घनहाता आगे दीडना सोचा है। एककर साबने समझन का असे अवसर नहीं है। यह नहीं पहचानता कि अमने भौतिक रूपसे यह न कुछ है, क्योंकि यह माम-मन्त्रा हैडनी-त्वचाका सलता फिरता पुतला मात्र है।

नहीं ॥ । अमरा चेतनता और मजबूत गरीर ॥ जग
नहीं ह । जीवन-भ्योनित ज्ञानि अमर नीतर स्थित
मानव-देवताकी दन ॥ । यह धन ह और ज्ञान गति
और गुणका आधार ह । यह सब मही असर नीतर सब
कुछ मोरब ह । यह चरित्रका धनता छोड़ ह और
। तरक मानवकी- सदा गान्धन रत्नका मानवकी
पक्षपात ता सब जीवनमें सफल हाकर लालम
गति सिद्ध करवा । भोनितता भक्त वा ध्याय
देवताकीन मायकाकी अवस्था हो- बालकताम ये
बड़े- ॥ मजबूतोंन ज्ञानका चरित्र ठिकान ली हो । ध
भा सब मानवकी और बाहुल्य हो रहे ह । भारत
समाज मानवताका हाथी रहा ह । जन आकाशों नीर
साधुमान लोकके बीच-कानन मानवताकी गानना
किया ह । जिन युगम भी जन साथ आगलक ह और य
लोककी मायकाका बाठ पड़ा रहे ह । तब भारतका
मानव बहुत रहा ह । वह प्राचाका सार भोनिकी प्र
लोक भोनिक-धनकीधन दन नहीं पा रहा ह । जग
अवसरपर मानवताका प्रचारकलिय जा भी प्रचार किया
साये, यह नुत्य ह ।

भाभी रजनका यह स प्रयान जिनो दिगामें अक
दीक बल्य ह । अ होंने जन सक् ज्ञानकाका हाकन
समझा और विकसित किया ह । साथ ही विज्ञान लयक
पु पयान भी प्रयोग विज्ञानकाके विचारका लक्ष्य

करते समय योग्य पाप निया ह । मानवताक मोतियोंको
राष्ट्रभाषाके मुदद धाममें पिराकर अहान अक मन्ती
काय किया ह । अनुरा मेरा अभिनदन । लोक मानव
ताको समझ यही मेरी कामना ह ।

कामताग्मा ज्ञन
अ य १, अग्नि वि २ नैन मिता
अलिगज-एरा

म्व महात्मा गात्री

जान श्रीमहात्मा स्वामीनाम जो सम्मान
निया जाता है वह एव ही कारणमे । अहिंसा
धमना अहान जो पचार और परमार किया
यही वह है, एक पारेमें मुने मदेन नहीं है ।
अहिंसा नस्त्रके मधमे रहे पचारक महात्मा
स्वामी ह ।

सर्वे मम उ मांगल्यम्
सर्वे कल्याण कारणम्
प्रधान मय धर्माणम्
ऐनम् जयति शामनम्



चत्वारि सरण पञ्चामि,
अरिने मरण पञ्चामि
सिद्ध सरण पञ्चामि,
माहू सरण पञ्चामि,
पञ्चली पञ्च धम्म सरणं पञ्चामि।

मानवता

— मानव जन्म यानि —

१ मानव जन्म यानि-मुक्ति-नगरीमें प्रविष्ट होनेका मुख्य प्रवेष्टा द्वार ।

२

२ मानव जन्म यानि-ब्रह्म जरा व मृत्युकी द्विपाजतपूर्णक ऑपरेशन करनेवाला एक दिव्य डिस्पन्सरा (अस्पताल) ।

३

३ मानव जन्म यानि-धर्मका घड वैमानपर क्यापार करनेवाला एक मन्व्य चन्द्रगाह ।

४

५

(२)

४ मानव जन्म यानि-जीव-अजीव नपतत्य
छ द्रव्य आदि अगाध तत्वज्ञानभी शिक्षा देने
वाला एक महान् महाविशाल्य (कॉलेज) ।



५ मानव जन्म यानि-मोहराजाद्वारा फज्जे
में ली, अगाध, अगाजित घनराशिमें, कानूनके-
अनुसार न्यायालयमें लट्ठ, पुन प्राप्त कर देनेवाला
एक निभय, निहर कानूनतज्ञ (बिरिस्टर) ।



६ मानव जन्म यानि-अगाजित दिव्य वैभव
य यज्ञ आरामके पूर्णाधिकारी देव-मानवोंद्वारा
बार बार इच्छित, एक अपूर्व वस्तु ।



७ मानव जन्म यानि-अपार अपरम्पार भव
सागरसे विरानेवाली एक महान्-मजबूत
स्त्रीमर ।



८ मानव जन्म यानि-ज्ञान (Permanent)

ज्ञाति देनेवाली एक अद्भुत सस्था शान्ति
निकेतन ।



९ मानव जन्म यानि-आत्मामें रहे विज्ञानके
सबे रूप व अपूर्व निधीको प्रगट करनेवाला एक
ईमानदार पैमानक ।



१० मानव जन्म यानि-हमसे अमर्य
योग्य दुरिधत शिष्यपूरीको एक ही क्षणमें
पहुँचानेवाला अजीब शक्तिशाली वायुयान ।



११ मानव जन्म यानि-अज्ञान-विमिर
में ज्ञान ज्योत्सका प्रकाश फैकनेवाला सर्वश्रेष्ठ
कंचे पोंदरका ग्लोब



१२ मानव जन्म यानि आधि, व्याधि,
उपाधि आदि विविधाग्निमें दग्ध आत्माओंको

अपने शीतल त्रिगुण जलसे शीतल करनेवाला एक सन्त ।

~ ~ ~

१३ मानव जन्म यानि-अग्नि मैदानमें सन्तके समक्ष मोहस्थी शक्तिशाली पुर्स्तीनाम्को पराजित करनेवाला एक सुत्रित्यास मह ।

~ ~ ~

१४ मानव जन्म यानि-लोहे वैसी धमी आत्म'का बुद्धि मम धमानेवाला एक जागृकर ।

~ ~ ~

१५ मानव जन्म यानि-छोट बड़े जगतमात्रके समस्त प्राणी वर्गके सुरक्षणका धीढा उठानेका अपूर्य माहस दिशानेका सुदर सुयोग्य धाम ।

~ ~ ~

१६ मानव जन्म यानि-जिन पूजा-गुरुसेवा-आराधना-मुपाव्रदान-गुणानुपम-आगमशास्त्र-

धरण पठनादि छ विविध फलाभा देनेवाला एक
परोपकारी अद्भुत वृक्ष ।

२ २

१७ मानव जन्म यानि—दशन (सम्यक्दृष्ट)
ज्ञान चार्मिशादि ये तीन अमून्य रत्न—राजोंका
सुखर आनासस्थान एक बड़ा थाल ।

२ ३

१८ मानव जन्म यानि—सभी मनकामना
ओंको पूरा करनेवाला माधन—एक अपूर्य धिता
मणी रत्न ।

१९ मानव जन्म यानि—आत्माके मोक्षप्राप्ति
जन्मसिद्ध दृष्टको मिलानेवाला एक अमूल्य
अयमर ।

-- याद रखो --

याद रखो-दुनियाभरका कान्हि य मिदिषो
मिलना प्राय मुल्भ है रुक्मि धातरागधर्म युग
मानय दह पुन मिलना अत्यन्त मुल्भ है ।

X

X

X

याद रखो-आगे अथवा पीछे सबको समगाजदे
पर जाना ता है ही अत मृत्युसे न डरते, पापों
दरना भीरवा ।

X

X

X

याद रखो-बालाघावार, लांच-रिखत अथवा
छूट पाटसे एक्कित की मपासि, तुम्हारी
मृत्युके पश्चात् कभी साथ न आवेगी, बल्कि उससे
उपार्जित भयंकर पाप तुम्हारे साथ आ, सरह तरदही
यातनाएँ दें, तुम्हें छठीका दूध याद करावेंगे ।

X

X

X

याद रखो—अपने सगे संबंधियोंके लिये तुम धर्मको विस्मरण कर आत्माका सत्यानाश कर रहे हो, लेकिन तुम्हारा सत्यानाश होते ही वे लोग फिरके कभी तुम्हारा मुँह न देखेंगे ।

X

X

X

याद रखो—अहिंसा सयम और नपकी सच्ची व्याख्याके ज्ञान व उसके ठीक तरहसे पालन सिवाय विश्वमें शांति-साम्राज्यकी स्थापना होना प्राय असंभव है ।

X

X

X

याद रखो—जो जात्माएँ धर्मका सयस और सदाकाल रक्षण करती हैं, धर्म स्वयं उनका संरक्षण करता है ।

X

X

X

याद रखो—आ देश अथवा शासन-तंत्र [संस्तनत] पतित पावन करनेवाली धर्म की अमूल्य निधीको सम्हालती नहीं उपेक्षा करती है वह स्वयं अपने पतनको निमग्न दे रही है—यह सैद्धांतिक सत्य है ।

+

+

+

चाह रही। अतः प्रत्येक प्राणि-मात्रा अपना
विदगी प्यारी है, अन किन्ना प्राणिकी विन्गी
रुत्म-ममात्र करनेका अधिकार किसीका नहीं ।

× + +

चाह रही—मित्र्याभिमानम अपना जीनात फर्न
भूल अगर दब मुन्के सम-व मस्तक न हृषाओगे
तो समय आनपर विषय लपट य अपद अहान
आत्माआक सामने सिर नमाना पड़ेगा ।

+ × ×

चाह रही— इम मायाका जगतम व्याप्त सभा
हु जौने दूर करनेकी रामबाण औपधि एक प्रभु
भक्ति है । निनक जायनमें नसका स्थान नहीं,
बह जीवन पशु-जीवनही है ।

+ + ×

चाह रही—तुम्हारा तो कुछ भला बुरा होता
है—उह सब शुभ अशुभ कमा का पूर्ण आभारी है
और उसाकी बनहसे सब हाता है । अ-य
कारण मात्र है ।

× + ×

याद रखा—बन्दरहुकर और टिड्डी
आदि मृक प्राणियोंके जीवनके बदले सिर्फ मानव
जातिकी रक्षा करनेका सिद्धांत निहायत सशुचित,
सुच्छ, क्याहीन और अज्ञानी मास्तिष्ककी उपज
हो, मुझ जनाके लिये कतभी स्वागतार्ह नहीं है ।

X X X

याद रखो—राग और द्वेषके सिवाय जिस
जगमें तुम्हारा अन्य कोई शत्रु है ही नहीं ।
धार्मिक अन्योर्मि शत्रुत्वकी कल्पनाके करुण (करने
वाले) “ नमो अरिहताण ” जिस महान् पन्थी
पास्तनिक व्याख्याको समझे ही नहीं ।

X X X

याद रखो—आपकी सद्गतिका आधार दुनिया
के समस्त धर्म धन विधि, मान-पान सूटी आन
दान अथवा श्रमशान यात्रामें उपस्थित विशाल
भेदिनी आदिपर नहीं रहता—लेकिन उसका मुख्य
आधार तो तुमने अपने सारे जीवनमें रखे सदाचार
पर पूर्णरूपेण अवलंबित है ।

X X X

याद रखो—असं लोककी शासन पद्धति, सत्ता-सत्तके फायदे-फानुनोंको तुम चाहो तो धोड़के पी सकते हो लेकिन 'धर्म-सत्ता' द्वारा जारी किये गानू-नोंके अधीन हुए बिना दूसरा कोई मार्ग नहीं—

X X X

याद रखो—जो विवेक-व्ययहार तुम्हें पसंद नहीं आता वही व्ययहार गर तुम दूसरोंके साथ करते हो—तब तुम न्यायान्यायको तोड़नेमें मुख्य साहायक ऐसी भवनी तंत्र पुद्धिका सरे आम मौलाम पर रहे हो ।

X X X

याद रखो—आशा-रानीके जो दास हैं—ये तो समस्त सत्तारके दास हैं । लेकिन जिसने आशा-रानीको 'अपनी दासी बना दी है, सारी दुनिया उसकी दास है ।

X X X

याद रखो—तुम जिसे विपत्ति मानते हो वह, विपत्ति नहीं ठीक वैसे ही सपत्ति—भी सपत्ति नहीं ।
 शक्ति देवाधिदेव पातराग परमात्माका विरमरण

यही जीवनकी सच्ची विपत्ति और स्मरण यही सच्ची संपत्ति है ।

X X X

याद रखो—आशा अतृप्त है और आयु मर्यादित—(परिमित) है । आशाका खड़ा कर्मी भरता नहीं—अतः अपनी मर्यादित आयुद्वारा मसारको मर्यादित बनानेका प्रयत्न कर लो ।

X X X

याद रखो—आप अन्य लोगोंको बटे-बटे उपदेश देनेमें अग्ने पड़ित हो आर उपदेश देनेकी प्रतिफल बिता बिचा करत हो इतनी ही सामधानी उस उपदेशानुसार अपने जीवनको—बनानेमें रखो तो साहसिकी ओर कहीं दूर नहीं वहिक अपनी ही मुट्ठीमें है ।

X X X

याद रखो—जिस विषयमें तुम रथ निष्णात (तज्ञ Expert), न हो, उसके प्रारम्भमें तुम्हारी मलाह बिल्कुल निरूपयोगी होनेसे भूल करके भी ऐसी

घातमि नाहव अपनो टांग मत अहाओ ।

× × ×

याद रखा—पूरभरमें उपार्जित पुण्य-कर्मोंका प्रभाव जर तब कायम है तर तर तुम्हारे सहगों तो क्या हाथों अपराधोंकी भी क्षमा मिलेगी । लेकिन पुण्यप्रभावके नामशेष हा पापोंदय होने पर और सभी अपराधोंकी वलभी सुल जाने पर तुम्हारे जीवनमें भयङ्कता दु ग दावानल तुम्हें जलाकर भस्मीभूत कर दगा ।

× × ×

याद रखो—असार ससारमें सचे सुखकी पोन करनेका प्रयत्न—यह तो पानी मयके मक्सम निफालनेकी मर्मापा रखनेके समान अज्ञान चेष्टाके सिवाय दूसरा कुछ नहीं ।

× × ×

याद रखो—पाप समाहित करते समय तुम्हारी झूठी प्रशंसा कर पीठ सहलाने (मपयपाने) वाले अिम चगमें बहुत मिलेंगे । लेकिन जर तुम्हारी

पीठपर छाट्टियोंकी चारिश होंगी तब घबानेवाला
हूँ भी षोभी न मिलेगा ।

+ + +

याद रखो—सुन्दारा पुण्य-प्रदीप जब तक
जगमगाता है तब तक सब सुन्दारे अनुरुद्ध तथा
साथी बने रहेंगे, लेकिन जब प्रदीप बुझ जायेगा
और सर्वत्र अंधकार फैल जायगा तब मित्र और
साथी सखी भी शत्रुका बाय करेंगे ।

X X X

याद रखो—देवप्रेष्ठ-जग सार्यनाह प्रभु
निनेश्वरके मंदिर व जपाश्रय ये जन्म मरणकी
शस्त्र त्रिया (Operation) करनेवाले बड़े अस्पताल
और जीनादि सत्यका अपूर्वज्ञान देनेवाले भय
महाविद्यालय (College) हैं । इन दोनों उपयुक्त
संस्थाओंका नाश चाहनेवाले, अपना सत्पानाश,
साथ ही साथ असंख्य आत्माओंके हित पर
कुठारापात करनेवाले हैं ।

+ + +

याद रखो—देवोंद्वारा उपभोगित अनन्तकाल
तकके प्रचुर दैवी सुखोंका भी एक दिन अंत

होता है, तो फिर अगुर्लवे 'मिटोपर गिनने' जितने मानव मात्रके तुच्छ क्षणभंगुर 'भुग्न' अंत होते कौन भी देर लगानधार्ता है ? अतः अशाश्वत सुगोंके पीछे पागल न घन, शाश्वत सुमर्षी प्राप्ति हेतु प्रयास करो ।

+

+

+

याद रखो—मैं और मेरी नाम और अहमकी मारामारी जयतक जीवनसे जड़मूल उगड़ न जायेगी, तबतक चौराशी लाख भव यानिरे पर दमन न करोगे ।

+

+

+

याद रखो—धनप्रयोगशीले सुमदिन गर धन की पूजा करनेसे धनवान बन सकते, सो दीन दरीद्री बन रहें । लेकिन धीतराग देवकी अद्या-पूर्वक पूजा अर्चना करनेसे सब कुछ विना मोगि मिल जायगा ।

x

x

x

याद रखो—सत्ताकी निरांकुश शक्ति प्राप्तकर नियामे प्रादि-त्रादिका वातावरण सजनेमें भले

ही तुम सफलता प्राप्त कर लोगे । लेकिन आन
वाले भयमें कर्म-सत्ताका, कस्तर पजा भी तुम्हें
ग्राहि ग्राहि करनेमें कर्मी न करेगा ।

× × ×

याद रखो—जबतक सही दृष्ट्याका अंत न
भायेगा, तबतक तुम्हारी दरिद्रताका भी जीवनम्
कभी अंत आनेवाला नहीं ।

× × ×

याद रखो—जिंदगीकी अतिम भास [सॉस]
तक किसीकी कैसी भी योग्य रीतिसे सेवा सुझुपा
हुम भले करोगे लेकिन जबतक देव-भुरु धर्म
नामक इस महान सिपुनी विभूतियाकी सेवा न
करोगे तबतक मोक्ष रूप मीठा मेवा तुम्ह
हस्तगत होना प्राय मुश्किल है ।।

उससे तुझे क्या ?

हे चेतन ! सारी दुनियाके प्राणी भल तुझे छुक छुक कर प्रातिदिन सौ बार नमस्कार करते हो, उससे तुझे क्या लेना देना ? तेरी जीवन-नीकाके संरक्षणका मुख्य आधार-नमस्कार अथवा ध्यान नहीं बल्कि तेरे सदाचार व सुखभाज पर अवलम्बित है ।

+ + +

हे चेतन ! लाखों-करोड़ोंकी अगणित संपत्ति तेरे पास होनेसे तुझे क्या लाभ ? मृत्युसमय तेरे साथ तो तूने अपने हाथसे सदन्यय किया द्रव्य ही आयेगा ।

+ + +

हे चेतन ! टेबलपर जोर-जोरसे मुझे ध रग मचपर बार बार ठोकर लगा अपने विभिन्न अभिनय द्वारा किसी भी किस्मके नास्तिकोंकी

तालियासे मार व्यामको - गैमानवाला भल
तू प्रगर घटा क्यों न हा ? लेकिन तेरा
आत्मकल्याण ता दवाधिन्त्र तानत्रधु चातराग
भगवानकी आज्ञानुसार जीवन व्यस्त करनसे
ही होगा ।

+ + +

हे चेतन ! तू कमा भी, मिनना भी उद्य
वर्जेना मत्ताधिकारी क्या न हो-उमसे तुझे क्या ?
सेरे मस्तनपर रात निन लटकती मममत्तात्पा
सलजारना नाश तो धर्म-सत्ताकी क्षरणम जानस
ही होगा ।

+ + +

हे चेतन ! भले ही तेरी मृत्युके पश्चात् सारे
शहरके-धानार बंद रहे, उमसे तुझे क्या ? तर
जीवनमें गत निन चल रहे अधम धाजारका
हमेशाके लिये उ न किया जायगा तब तर
तेरी दुर्गतिके द्वार बंद होने प्राय बहुत ही मुश्किल
है ।

× × ×

हे चेतन ! तेरे मनोहर-रमणीय-मन्य प्रामादमें
 स्वर्ग स्थित रहितरार्जव। सदृष्टियों रूपयौवना
 अप्सराओंमें भी नीचा दिखावे ऐसी घौवनकी
 महार छूटती सुंदर कमनीय कामिनियोंका जमघट
 क्यों न हो, उससे तुझे क्या ? सिर्फ एक ही
 शिष्यमुदरीके साथ शारी क्रिये बिना तुझे सच्ची
 आत्म-शांति कभी अपने जीवनमें प्राप्त न होगी ।

+ X +

हे चेतन ! रुबावदार, ऊंचे कद, चौड सीने
 और मनघूत बाँधियाली सशस्त्र देहसे भले ही
 तू सारी पृथ्वीको अपने एक प्रहारमें कम्पा सकता
 हो । लेकिन तेरी सच्ची बहादुरी, वीरता, और
 शौर्य तो अभ्यन्तर शत्रुको धरधर कपानम ही है ।

+ + +

हे चेतन ! अखिल विश्वकी समस्त भाषा व
 शाखापर भले तेरा सपूर्ण कानू हो, उससे तुझे
 क्या ? तेरा आत्मकल्याण तो पंचेन्द्रियोंपर पूर्ण
 रूपसे कानू पाने पर ही होगा ।

X X X

हे चेतन ! जिस मायावी जगम लाखों करोड़ों
 की सरयाम तेरे अनुयायी व साथी क्या न हो ?
 उससे तुझे क्या ? जब तू स्वयं धर्मका सच्चा
 अनुयायी बनेगा तभी तेरा खैर है ।

X X X

हे चेतन ! सारी दुनिया तुझसे अच्छी तरह
 भले परिचित हो, उससे तुझ क्या ? तेरी आत्म
 सिद्धि तो सुदेय, मुगुरु और सुधर्म इन तनिसे
 परिचित होनेपर ही होगी ।

X + X

हे चेतन ! तेरी जान पहचान विश्वकी सुप्रसिद्ध
 विभूतियोंसे भलेही क्यों न हो, उससे तुझे क्या ?
 ऐक्यन समस्त शक्तियों व सिद्धियों तो तभी हस्तगत
 होगी जब तू अपनी आत्माको पहचानेगा ।

X X ■

हे चेतन ! तुझे दुनियाभरकी सब उपाधियों क्यों
 न प्राप्त हो गयीं हो, उससे तुझे क्या ? तेरी मय
 मायावी उपाधियोंका अंत तभी होगा जब तुझे
 सत्य धर्मकी प्राप्ति होगी ।

X X X

हूँ चेतन ! तब स्मृति यात्रामें मलदी लानों-
की तादात्म्य भीड़ एकत्रित हो, उसमें तुझे क्या !
परलाकमें ता तुझे अकेली जाना है और यही
सुख तुम्हें उपभोग भी तुझे अपने ही करना
है ।

x x x

हूँ चेतन ! मलदी तू यह सब पलाओका कला-
निधि है उसमें तुझे क्या ! विना धर्म कलामें
मादिर हुए इस दुनियामें तूरी मुक्ति न होगी ।

+ + +

हूँ चेतन ! तेरा प्रतिमाकी अनावरण विधा भले
है पड़े पड़े शब्दोंमें अगत विदयास व्याप्ति और
हाथोंसे है, उससे तुझे क्या ! अतएव तू अपनी
आत्मापर रहें अष्टकमावरणको दूर न करेगा
तब तक तुम्हें—जन्ममरण के झूलेमें अनिच्छावश
भी झूलना ही पड़ेगा ।

उसी दिनको धन्य-दिन समझना

राग और द्वेष मामूळ आत्माके दो महान् शत्रुआपे विवेचना देनाधिनर प्रभु विनोदशङ्करो ही नय माननकी गंगाही [माश्री] जय तुम्हारी आत्मा न, उम्मा दिनका जीवनका धन्य दिन समझना ।

X + X

अहिंसा मत्स्य, अचीर्य, प्रद्युम्न, अपरिग्रहादि पंचमहाजनधारि तथा शत्रि भोक्तन स्यागी गुरुदेव को ही जय तुम्हारी आत्मा गुरुके तीरपर स्पी-काट, उम्मी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

X X X

छोटे अथवा बड़, मनोप या निर्दोष प्राणिपर न्या फरनेकी निगर निहिमका घोष करनेवाले प्रभु रीतगाव कथित धर्मका ही सच्चा धर्म मानने

की प्रतिष्ठा जब तुम्हारी आत्मा कर ले, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

X

X

X

त्रिलोकप्रियति जगन्नाथक दशार्धदेव भी
त्रिनेश्वरदेवक दशममात्रसे नैन तथा पूजन भचना
दिने हाथ जिन नि पावेन बनें, उसी दिनको
जीवनका धन्य दिन समझना ।

X

X

X

श्रमणस्य [साधु व्रति] की गुरु उपाधिसे
विभूषित करन तथा समता धमका मर्यादा ज्ञान
देनेवाला ऐसी उत्तम धार्मिक श्रिया सामयिक
जिस दिन तुम करो, उसी दिनको जीवनका धन्य
दिन समझना ।

+

+

+

एव चतुर्कर्म [सुदर्शक यहाइ] और अन्यका
अपकर्ष [बुराई] करनेकी अधम प्रवृत्तिको जिस
दिन तुम्हारी आत्मा तिलाजली दे, जड़मूलसे नष्ट
कर दे, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

+

X

+

सब पापोंमें अग्रणीपद प्राप्त मिथ्यास्व नामक पाप-श्रुतिको जिस दिन तुम अपने जीवनसे सगके छिड़ बिदा कर दो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

X + X

मोह-मायादि नीरमे लबालब ससार रूपमें गलैतरु दूरे प्राणि भासको दूबनेसे बचा, बाहर खींचनेवाला प्रभु धीतरागकी मृदुघाणी जिस दिन कर्णगोचर हो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

+ X +

मय दानोंमें श्रेष्ठ औमा सुपात्र मान देनेका जब गुभातर तुम्हें प्राप्त हो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

X X X

पंचेन्द्रिय विषयाकी दास यह आत्मा, जिस दिन उन इन्द्रियोंको अपनी दासी बनाये, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

X X X

गत अनन्त मण्डियोंम दुर्गाचाकी दुर्गा-मय
गहरी घाटीमें स्नान करती आत्मा विम दिन
सदाचार रूपा निमल शोभन स्नान करे, उमा
दिनको जीवनका धन्य दिन समझना ।

X

X

X

गत और दिन अहनिश मयका युगा करनकी
दुष्ट भाषना रूपा विषममे दुष्टकी तरा मिरगवान
घाटी आत्मा विम दिन दुष्मनका भलाई करने-
की पुति भाषण कर, उमी दिनका जीवनका धन्य
दिन समझना ।

५

हाट, हवली, रामा , हम, हीरा, माती माजिक,
याग यमीचे, कचन कामिनी, सत्ता-मनादि भण-
भगुर वगैरोंक पाछे नीधाना वन इनतर नर-नर
भटवनेवाला आत्मा विम दिन अविनश्वर-धमकी
पाछे नीधाना वनेगी, उसी दिनको जीवनका
धन्य दिन समझना ।

+

+

+

समस्त मसारक त्यागाथ अममय अज्ञान र्नी
 तुम्हारी आत्मा तिस तिन बारह प्रतापे धारण
 करेगा उसी दिनको जीवनका धन्य तिन समझना ।

५

॥ तंहे अविपति चक्रवर्ती भरत राजा
 महाराजाओंक मुकुट मणि राधावि प्रसन्नचद्र
 और महाजन चूडामणि नररत्न नाठ शालीभद्र
 आदिद्वारा स्थापारित चारित्र धमका जिस दिन
 तुम्हारी आत्मा धारण करेगा, —सी तिनको जीव
 नका धन्य तिन समझना ।

६

अष्ट कमारणका छेत्, न म मरणका हर जिस
 दिन तुम्हारी आत्मा शिवनगरीकी ओर प्रस्थान
 करेगी उमा दिनको जीवनका मर्षोदय तिन समझना

उस समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन ! अभी तो तू पूरा भयमें उपार्जित पुण्यका प्रभावमें परलोककी चिन्ता, तू मरका भूल, मरूँ औशोआराममें चिन्ता घसर कर रहा है— श्रुशिर्यो मर रहा है । लेकिन इस भयमें अगर तू कुछ भी पुण्योत्थान न करेगा तो जय परभयम दुर्ग होनेका समय आयागा, उस समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन ! तू क्षुधित कैसे रह सकेगा जिसा चित्ताग्रज जय कभी सपथध्याका धाल आता है तब उस टाल देता है । लेकिन पापोन्म हानेपर क्षुधित रहनेका प्रमग जय कभी नेरे आयनम आयागा, उस समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन ! किन्हाल ता तेरा मिनाय समय

पर गरमागरम [तानी] रसोत्री ज्वलन्ध न होनेपर गुस्सा आसमानपर चढ़ जाता है, लेकिन दरिद्रानस्थाका आगमन होते ठंडी रसोत्रीके भी फाँफे पड़ेंगे, उस समय तू क्या करेगा ?

१

हे चेतन ! गर्मीके दिनोंमें मयनारायण द्वारा वसुंधरा पर छोड़े जमि बाणाकी धनहसे गरम बना सप्त जल न भानेपर उसमें तू बर्फ [Ice] डाल ठंडा बनाता है लेकिन पशु-पक्षीक तिर्यच भयम गदा, जूठा, मैला, व दुर्यध मय जल-पान करनेकी चेला आणगा, उस समय तू क्या करेगा ?

२

हे चेतन ! अभी तो तू संपत्ति गर्वम भूल अक्कड़ बना किसी अयक मानने एक क्षण भी देखना पसंद नहीं करता लेकिन संपत्ति हास होने पर जय नीच मनुष्योंक मुम्मे तकने व आठ आठ आँसू धड़ानेका समय आका उस समय तू क्या करेगा !

१ ५

हे चेतन ! अभी ता तू अपनेका प्राप्त मत्ताके बलमे
सभाका हराने धमकाने य सतानमें ही निंदगा
का मचा मानता है, लेकिन सत्ताका डोर टूटते
ही चर घार भयानक मचा सत्तानेका प्रसंग आणा
उस समय तू क्या करेगा ?

ह चेतन ! अभी ता तुम रूभीके तीन
मणके बह गहके बिना सुगन्ध नाद भी नहीं
आती, लेकिन धर्म विहीन जीवनके प्रभावमे
चर गये फूटपाथपर सोनेका मौस आयेगा, २२
समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन ! अभी तो तुम सदी-गामी-बपा भुधा
मृगणा और कपटि सामान्य कोटिके दु ग्वसे
भी बस्त हो । मभय होनेपर भी धमकाय नहीं
करते । लेकिन धमविहीन बने तुम्हें जर
नरककी धेनुमार अमल यातनाके सहन करने
का प्रसंग आयेगा, २३ समय तू क्या करेगा ?

हूँ चेतन ! फिरहाल तू तुझ पराधकारार्थ
एक पार्थी भी रख करनेमें विषमग्रर चद्र जाता
है, लेकिन चोर-लुट्ठेऔर डाकुआके पनेमें कैमन
पर जर है तुझे भिगारी जना हेंगे-उम समय
तू क्या करगा ?

१.

हे चेतन ! अभी तू जिम्दार अणिय
त्यार्थ पदमूलादि अमन्य पन्थोंका भक्षण
करते समय जीवन्थापा जरा भी बिगार नहीं
करता, लेकिन पन्तु पीत्रमम घाम वृम खामेका
मुगी धारा आयगी-इस समय तू क्या करेगा !

१.

हूँ चेतन ! अभी तू किसी जीव मात्रजी सेवा
सुश्रुषा करना तेर जी पर आता है, लेकिन
भरचक भैमे वन भरमे भरा गाड़ियों अधधा
पानीकी मडक गोंदनी पटगी-इस समय तू
करगा ?

हे चेतन ! फिलहाल तो तू मिथ्याभिमानमें भूला, अक्कटवृत्ति अगिमारकर सीना तानके सभीको तुच्छ समझता सरेबाजार चलता है । लेकिन बगालियतके गले लगते ही ये सारी होस्त्रियाँ एक ओर रख, नीचे मनुष्यको भी सलाम करनेकी पारी आणगी-उस समय तू क्या करेगा ?



हे चेतन ! जब तू निरागी है, तब शत्रु हानेपर भी धर्म पायमें दिल नहीं लगाता । लेकिन जब चारों ओरसे रोग शोक दुःखादि शत्रु तुम्हें घेर लेंगे और तू विल्कुल असमर्थ अशक्त बन जाएगा-तब तू क्या करेगा ?



सच्ची क्रांति

सुदेव, सुगुरु तथा सुधर्ममे उपरिचित
जीवनको अिन तत्त्वसरीमे परिचित कर, रात
दिन उसकी ही सेवामें तत्पर बनाना-यही
जीवनकी सच्ची क्रांति है ।



सम्यग् द्धान [True faith] सम्यग्ज्ञान
[True Knowledge] और सम्यग् चारित्र
[True Conduct] इस रत्नत्रयेसे रित जीवन
मनुष्यको मुहूर्तक भर लेना यही जीवनकी
सच्ची क्रांति है ।



हिंसा विशार्चनाके पूर्ण रूपेण वशम रहे जीव
नको अहिंसा देवीका अनन्य भक्त बना कर उसे
सफल करना यही जीवनकी सच्ची क्रांति है ।



पद्म-चम्प पर झूठ बोलनकी घुरी आन्तमें
 व्यथ व्यतीत होत जीवनका मय्यादी घना उत्त
 मफल बनाना याह जीवनकी सच्ची प्राप्ति है

--

पराइ यन्तुपर अनाधिकारपूज मन्ना फ
 उस विना रिमी शौरगुल्के हनम करनेकी मी
 प्रवृत्तिमें तह उने जीवनका प्रामाणिकत्वका बीअ
 वे आत्म सतोषी बनाना—यही जीवनकी सच्ची
 प्राप्ति है ।

२ ३

दुराचारके दुर्ग-धमय गतमें रात दिन नीचप
 सरह गोते लगानयागे जीवनको सदा-गार रूप
 परिश्रम गगाके सख्त झीतल नारमें नान करने
 लिय उग्रत करना याह जीवनकी सच्ची प्राप्ति है

१५ --

परिमहके प्रहसे मल बनै जीवनको सतोष ध
 म मल बनाना—यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति

१ १

राग दुपरी भट्टीम रात दिन चल रह नाउन

समता नीरसे शांत करना यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है ।



स्व-स्तुति और परनिन्दका गन्त व्यापार करने वाली जीवन पत्नीको स्वनिंदा और पर प्रशंसा-क व्यापारका रासक बनाना, यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है ।



अन्यथा उत्कप निन्दार मन ही मन जलनगले हरायी जीवनको किसीका भी उत्कप निन्दार क्षयित होनेकी प्रवृत्ति प्रदान करना यहा जीव नका सच्ची प्राप्ति है ।



अन्यके अयगुण निरीक्षणाय बाक वृत्ति धारण कर रहे जीवनको गुणप्राप्ति बना, इस वृत्तिगाला बनाना—यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है ।



अह और ममका रात दिन आपस में भाया विभाधिनी न सि व्याभिमानरुपी भयकर अन्तर के बालि बन जीवनको नाहम् और न ममक

मुमत्र सिग्या उसके जालस छुडाना—यहा जीवनर सच्ची क्राति है ।

५

चसुगति रूप समारमें परिभ्रमण कर रह जीवनको पञ्चमहात्रनेके पालनद्वारा पचम-भातिम पहुँचाना यही-जीवनकी सच्ची क्राति है ।

५

अमात्रि फालमे मोहचक्ष बने जीवनको घमरश घनामा यही जीवनकी सच्ची क्राति है ।

५

उपरोक्त ' सच्ची क्राति ' की वास्तविक व्याख्या समये त्रिमा भ्रातिननक क्रातिके माहमें फसोगे तो भात की जोड़ी घटुन शाति भी जीवनसे रिदा हो जाएगा ।

—

सफलताकी सच्ची कूजी

मानव चम (मन) की सफलता ऐश्वर्यआराम, नाच, धूम, हँसी मचाऊ नही, लेकिन त्याग धर्मकी सुदृढ़ आराधनाम है ।

मानव देहकी सफलता सिर्फ उसे धष्ट पुष्ट घनावटी मौखिक प्रमाधनामे सचाने व अपटुहेट घने रहनेमें नही, लेकिन विविध प्रकारके मन नित्यानियम धारण करनेम है ।

धन संपत्तिकी सफलता उसे समहित करनेमें नही, लेकिन जगद्व नगह उसका मरुब्बय सदुपयोग करनेमें है ।

निब्हाकी सफलता किसीका अघर्णवाद, जमत्य तथा कटु बालनम नही लेकिन गुणीजनानी प्रशंसा सत्य और मृदु वाणीमें है ।

चक्षुआकी महत्ता नाटक रसल समाशे आदि
दुनियाके विविध स्वर-पोवा निहारनेमें नहीं, लेकिन
देव गुरुक दशनमें है ।

पान [फण] की सफलता, निंदा गुरा
धुनमेंमें नहीं, लेकिन क्षास-धषणमें है ।

पैरोकी सफलता देश विदेश अगिरा विभ
भ्रमण मुसाफिरी आदि रसदपट्टीमें नहीं, लेकिन
पैदल तीर्थयात्रा परनमें है ।

मन्तरकी महत्ता उसे अक्कड़ घना रात वि
कवर उठानेमें नहीं, लेकिन महारमाआके चरणों
सुखानमें है ।

हाथकी सफलता किसीपर कुपित हा मारक
करनेमें नहीं, लेकिन निर्यल नि सहाय गरीब
उदार मनसे कुछ न कुछ देनेमें है ।

बिद्याकी महत्ता लोगोंसे छुपाकर, भरत सम

अपने साथ ले जानमें नहीं, लेकिन किसी योग्य को उसमें निष्ठात करनेमें है ।



बुद्धिहीन सफलता किसीको जान भूझकर पत नके गहरे गर्तमें गिरानेमें नहीं, लेकिन धर्मके सुंदर प्रचारमें पथ भूलाको राह दिखानेमें है ।



अधिकार प्राप्तिहीन महत्ता नित्य नये पद्धतियोंकी रचना पर गरीबोंको कुचलनेमें नहीं, लेकिन जरूरत आनेपर उनपर उपकार करनेमें है ।



यत्निष्ठ बननेकी सफलता निर्बलाना अपने पैरा तल रौन्नेमें नहीं, लेकिन सबलस उनका संरक्षण करनेमें है ।



ज्ञानी बननेकी शुरुआत सिर्फ ध्यानविशुद्धि करनेमें तथा मिथ्याभिमान की घननेमें नहीं, लेकिन सदाचार युक्त जीवन बना आर्थोंको इस अज्ञानरूपी अध-कारमय दुनियाँमें प्रगति हेतु ज्ञान प्रकाश देनेमें है ।

चक्षुआर्यी महत्ता नाटक खेल समाजो छ
हुनियाऊ विविध स्वरूपोका निहारनेमें नही, छे
देय गुरुके दशनमें है ।

काम [वर्ण] की सफलता, निंदा
मुननमें नही, छेकिन शास्त्र-भयणमें है ।

पैरोकी सफलता देश विदेश अगिरा
भ्रमण मुसाफिरी आदि रसदपट्टीमें नही
वैदछ तीर्थयात्रा करनेमें है ।

मस्तककी महत्ता उसे अक्षय्य
ऊपर उठानेमें नही, छेकिन महात्मा
सुखानेमें है ।

हाथकी सफलता किसी-
करनेमें नही, छेकिन निः
उत्तर मनसे कुछ न कर

विनाकी महत्ता

भाग करना पड़ता है, इसीलिये तो अभी परमेश्वर हा ।

मालमिष्टाप्रति विविध प्रकारके भोजनका समागमन करनेकी तीव्र लालसा होनेपर भी सूर्यी रोशियों भी प्राप्त होना प्रायः असम्भव है, इसीलिये तो अभी परमेश्वर हा ।

निरोगी जीवन जितानेकी इच्छा रखनेवाला हात हा भी अनिच्छा का भयंकर महारोगीका शिकार करना पड़ता है, इसीलिये तो अभी परमेश्वर हा ।

शामना (धनाहारा) अथवा धन प्राप्त करने पर भी समाप्तियत (परिश्रम) का अनुभव प्रायः करना पड़ता है, इसीलिये तो अभी परमेश्वर हा ।

उत्तम नमस्कारादि करवाना बहुत ही पसन्द है फिर भी अथवा लुब्धक कर उत्तम नमस्कारादि करना पड़ता है, इसीलिये तो अभी परमेश्वर हा ।

तथा भोग भी दे-इस मायतासे धारण करने
की मथा ज्ञान है ।

पनिताद्वारक प्रभु स्वयं निमाता नहीं बल्कि
मय मागद्वार दे-इस मायतासे इन्द्रिय धारण
करने, यही मथा ज्ञान है ।

प्रादुर्गति तत्र त्वी आर अपसर हर्षा तु
परती जनता आत्म-प्रतिनिधी मन्त्री ॥ ३६
घटान, यही मथा ज्ञान है ।

मानवभरती मत्ता भागरी मही प्रविष्ट
त्यागता आभागी है-इस बहुत मरयता मन्त्रा
ग्यान्तर कर, यही मथा ज्ञान है ।

अग्निम रात और अग्नि जल रह तथा विषय
विहार रूपी भट्टीम सुन रह मानव समुदायको
चिरशान्ति प्रदान कर, यही मथा ज्ञान है ।

(५३)

राज शत्रुशत्रु अशरणना कर राग द्वेषानि
आन्तरिक शत्रु-ग्राम लोहालेनेका शक्ति प्रगट करे,
यही सच्चा ज्ञान है ।

चम और मृत्यु नामक ना महा मयकर
रागोंस मानवमायका दुष्टतास निलिखे, यही
सच्चा ज्ञान है ।

किसी भी मुख्यपर, धर्म रक्षणकी भावना
हृदयमें जाग्रत कर यही सच्चा ज्ञान है ।

पुण्य, पाप, पाण्डोर और आत्मा आदि
अतिरस्यम श्रद्धाके नन्द बनाय, यही सच्चा
ज्ञान है ।

मुख्य, सुमुख, नरा सुधमक प्रति जीवमात्रार्थ
में मान वृत्ति पला कर, यही सच्चा ज्ञान है ।

भक्त्य अम य, पद प्रियार्थि पशु-पक्षी मनुष्य
पर मान वृत्ति पला कर, यही सच्चा ज्ञान है ।

आदम् और ममकी मायामें अध बनी दुनियाको
‘मै किसीका नहीं और जगतम भरा फोर्ड नहीं’ भाव
मारुपी प्रसाद ज्योति बतान, यही सच्चा ज्ञान है ।

१ ५

अन्य किमीके दुर्गुण खोपनेके यजाय अपन
दुर्गुणका खोपनकी प्रवृत्ति प्रग्नान करे, यही सच्चा
ज्ञान है ।

पुण्यको पुण्य तथा पापको पाप माननका
वृत्ति हृदयमें जाग्रत करे, यही सच्चा ज्ञान है ।

५ ५

‘स्वाग धमरा अवलम्ब स्थि यगर किसीकी
सुखि हुई नहीं जाती तथा होगी नहीं’
सिद्धातमें श्रद्धा प्रकट करान, यही सच्चा ज्ञान है ।

जगतभरके तमाम पीद्गलीन वन्ध मिलना
सुलभ है, लेकिन सवज्ञ बधिन मुधर्म मिलना
दुर्लभ है, सिद्धातमें सपूर्ण विश्वास रखनेकी
मनि ये, यही सच्चा ज्ञान है ।

१ ५

सत्ता और सपत्तिका जीवनमें सदुपयोग
करना सिखाये, वही सच्चा ज्ञान है ।

- ३ -

पत्नीर त्रागतिर जमदाता माता पिताको
अलग घरमें रहनेके लिये धाव्य करनेकी, नीच
प्रवृत्ति न करावे, वही सच्चा ज्ञान है ।

- ४ -

दुराचारकी दुष्टता तथा सदाचारकी भेष्टता
समझावे, वही सच्चा ज्ञान है ।

- ५ -

इसी लोकोपयोगी सर्व ज्ञान मिथ्या है—
ऐसी मान्यता पैदा करे, वही सच्चा ज्ञान है ।

- ६ -

ससारके समस्त धधनोंसे मुझे कर मुक्ति
मिलेगी आदि मनोरथ उत्पन्न करानेमें सहाय्य
करे, वही सच्चा ज्ञान है ।

- ७ -

अश्वके साथ गर्दम, वस्तुरीके साथ कादव
तथा हारेके साथ पत्थरकी तुलना करनेवाली
मूर्खता न करावे, वही सच्चा ज्ञान है ।

वही कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेगी

प्रथम तावक भगवान् इरी आभीरको
निम कर्मसत्तान घात मात्तर लगातार जाही
रम अतराय उपस्थित पर मलाया—वही कर्मसत्ता
क्या तर मेरे जैसेका मुक्त रखेगी ?

निस कर्मसत्तान दयाधिंदर चरम तीर्थकर प्रभु
महारीरना लगातार साडे घात घर्षतार पार
दुख य अमय यातनाएँ दी जह कर्मसत्ता क्या
तर मेरे जैसेको जवन जालम मुक्त रखेगी !

+

ज्योती स्थानपर जह साय माठ महल पुर्वो
मृयुवाना सुन चक्रवर्ता सगरका दुख य

शोकधी गहरी ग्यादम निम मत्ताने क्षणभरम
 पङ्क जिया—ग्रह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे
 जैसेको अपने जालम मुक्त रखेगा ?

--

निसरी सेवामें रात दिन एक पलका भी अतर
 पड़ दिना घत्तसि सहस्र मुकटधारी राचा महाराजा
 तत्पर रहा व ऐसे चरुर्ती सनटुमारका घड़ीके
 सौत्रे भागमें निम कममत्तान मोह्य महारागोंका
 शिखर बना जिया, व कममत्ता क्या तेरे मेरे
 जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेगा ?

.

राज्य जैसे अभक्त, कममस्त शासनभक्तकी
 रापरानेश्वरद्वारा संचालित सिंगरटका विद्या
 राचमत्ता निस कममत्तान पलक मारन न मारते
 छीन ही, व कममत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको
 अपने जालसे मुक्त रखेगी ?

✓

पितृभक्त न्यायप्रिय प्रनाप्रिय धर्मिष्ठ श्री
 रामचंद्रजीको भी निम कर्मसत्तान लगातार
 चौदह वर्षतक जनरामजी असह्य सत्ता घसी

यह कर्मसत्ता क्या तेरे मेर जैसेका अपने जग
मुक्त रखेगी !

मनी शिरोमणी, नारीगत्न सातामाना
जिन कर्मसत्ता समपद्वर्षके मनमें
भरद निमाण कर, बनयासकी असय प
यानना दिलाइ यह कर्मसत्ता क्या तेरे
जैसेको अपन जालमे मुक्त रखेगी !

५

उपपन्नवोति यादगार्धाश, अजुनसग्रा थी
महाराजकी जिस कर्मसत्ताने जीवनकी स
पानी-पाना पुकारते तुहगारी-या कर्मसत्ता
क्या तेरे मेर जैसेको अपने जालमे मुक्त रखेगी

५

महाबलवान महाभारतनाथक पांच पाँहये
जिस कर्मसत्ताने लगातार बारह वर्षेनय भिर
बना जगल जगलकी ग्राह इनयाई यह कर्मस
किया तेरे मेर जैसेको अपने जालमे मुक्त रखेगी

५

५

(८९)

सत्यनादी हरिश्चन्द्रको निम कमसत्ताने
 तारामता जैमी अपनी सती साधरी पतिपरायण
 महारानीमे नाता सुडरा नीच भगीर पर पानी
 भरयाया, यह कमसत्ता क्या तर मेरे जैसेको
 अपने जालसे मुक्त रखेगी !

~ ~

महाराज दधिवाहनकी सुशील विनयी पुरी
 चदनगालाको निम सत्तार तुल्मोसीतमसे मर
 आम चौकमें पगुरी नाई बिकना पडा, यह कम
 सत्ता क्या तरे मेरे जमका अपने जालसे मुक्त
 रखेगी ?

~ ~

मगधाधिपति चरम तीर्थकर नेयाधिदेव
 प्रभु महारीरके अनन्य भक्त राजाधिराज
 श्रेणिकका निम फर्मसत्ताने महलकी सहल
 छुडरा कैदखाने भिचवा प्रडि दिन अपने ही पुत्र
 कुणिकसे पचास कोडोंकी मार मरवाई, यह
 फर्मसत्ता क्या तरे मेरे जैसेको अपने जालसे
 मुक्त रखेगी ?

~ ~

जिस सत्ताने नर जैस 'यावद्विषय-प्रतादितैषा'
 राजाको जुअरे घुरे व्यसनम पै माया, राज्यभ्रष्ट
 किया, यनयासक असह्य दु ग्न भागनेक लिय छोड
 दिया—यह कर्मसत्ता क्या तरे मेरे जैसे
 अपने जालसे मुक्त रहेगी !

—

जिस सत्ताने मालरूपति राजा मुनमे दर-दर
 भिक्षा भोगराइ—यह कर्मसत्ता क्या तरे मेरे
 जैसे छपु जीवको अपन जालमे मुक्त रहेगी ?

—

जिस कर्मसत्ताने फलायती सी मतीक दानों
 हाथ नि सफाच हो फटवाये—यह क्या तर मेरे
 जैसे छपु जीवको अपने जालसे मुक्त रहेगी ?

अतः

राजा-मदाराजा, श्रेष्ठ साहुकार, गरीब धनी
 ज्ञानी अज्ञाना, नर-नारी, बृद्ध बालरादि निनरो
 जिस सत्ताके असह्य पीडा-यातना और वेदनामे
 मुक्त होना हो तो उन्हें त्वरित गतिसे धर्मसत्ताकी
 पवित्र शरणमें जाना चाहिये ।

यही सच्ची मानव सेवा

जम-भरण नामक दो भयंकर रोगोंसे पीड़ित मानव मात्रको उसकी पीड़ामें मर्यादा मुक्ति दिलाने हेतु निरंतर धर्म औषधि पान कराना यही सच्ची मानव-सेवा है ।



राग आर द्वेष यही प्राणिमात्रों के दो भयंकर दुश्मन हैं और उनसे ही वांछा-व मर्त्यको प्रयत्न मिल जाना—यही सच्ची मानव सेवा है ।



विषय-कषायादि कुसाग-पर दृष्टगतिमें लागे बहरी मानव-जातिको उसमें बिछे शीघ्र दुःखदादि कष्टोंसे सावधान करना—यही सच्ची मानव-सेवा है ।



माया और ममत्कार्की गहरे गूँघे दूष रह
मारी दुनियावा ममता और त्यागकी डागमे
सहार दूषनमे बगाना—यही सही मानव सत्ता
है ।

-- /

रात और दिन आर्पिण मिर्च पौदगलिष
उन्नति प्रगतिर पाउ नीयानी धनी दुनियावा
आत्मोन्नतिरी सच्ची राह सुझाना-बताना, या
मन्ची मानव सेवा है ।

~

जगत ममलमें रहे छात्रे-बड़े सभी पाणिया
रक्षार्थ " आत्मयत्न सर्व भूतेषु " घोषका सर्व
गुलद पर—गुजामित पर, सभीका दयाकी मह
समझाना—यही मन्ची मानव सत्ता है ।

~

मानव-मात्रक हितको लक्ष्यम रख पर
पक्षियोंका बेधटक दृष्ट्या-सहार करनकी सत्ता
नेनेचालको उह बचानेकी मन्ची यत्न है ।

लिये उग्रत करना—यही मन्त्री मानव सेवा है ।



राज्य-शक्ति और मत्तादि विनाशक पन्थकि पीछे अमृत्यु ऐसे मानव-भरको किजूलमें व्यतीत करनेवालोंको उसके दुर्लभत्वका सच्चा ज्ञान दिलाना—यही मन्त्री मानव सेवा है ।



अनादि कालसे माह रूपी कुमरणी निशामे निद्रित अग्रिल विश्वको, धर्म-दोल धना जाग्रत करना—यही मन्त्री मानव सेवा है ।



मोह राजाद्वारा भये 'अहम्' व 'मम' नामक स्ताके जालम फँस अधी धनी जनताको 'नाहम्' व 'नमम' प्रतिज्ञा द्वारा प्रयुक्त निला, जालमेंसे छुड़ाना—यही मन्त्री मानव सेवा है ।



आदि व्याधि और उपाधि नामक वि-
विधाप्रिक्र अमय दाहमे दहिन [जलित]
जगन्ना, मय्यर् नर्शन, ज्ञान तथा धारि-
नैरक दीनत छीटास गाल दनाना—यही सखा
मानव मेवा है ।

✽ ✽

मिर्के अिसी हावरी हिनमाधक व्यवहारि-
शिक्षाक पीछ मर्या छायोरी सपाति पाना-
तग दाननगालाओ अिस हाव य परलाक मे-
दोना छोराफा एकान्त हित-माधक धार्मिक
शिक्षा भी पानोरी तरह पैस बहानकी प्रेरण
करना यही सखा मानव मेवा है ।

✽ ✽

कमसत्ता द्वारा नियमित [दपाई] आत्मा
असु मपाति भहाररा हनगत करने हनु यो-
नपाय-योनना करना, यही मरुची मानव से
है ।

घर्म ध्यानादि धार्मिक क्रियाओसे ही जगत
अकल्याण हुआ है—ऐसा मिथ्या प्रचार करनेवा

पर भूल प्रसारकोंकी निरथक बरखासस
भवत्याग-भागपर चाती, भोली प्रताका मर्य
यन्तुधितिका भान कराना—यही सची मानय
सेरा है ।

सदाचार तथा मर्दापरागम कासो दूर
भागते मानय मात्रको मर्दाचार तथा मर्दापराग
क निष्ठा लाना—यही सचा मानय सेरा है ।

मध घमाकी समानताय भूत-विशारम कद
समान हककी भागमारीक जागो कैम जगद
मधे य समान हकका वास्तविक जगद
ममज्ञाना—यही सचा मानय सेरा है ।

नाशवान्न शरीरकी ह्यानिपे छिने जगदी
आत्माकी बरदादीका सामान छिने काम
वाले मृग शिरोमणी हैं—जैसा कद मर कद
हरना नहीं—यही सचा मानय सेरा है ।

सच्ची सलाह

निवारणकी मर्चाया हो तो मैं कैसा हूँ उस ही
निवारण ।

रानकी इच्छा हो ता अपने अधम कृत्यों
(कु कृत्या) क लिय ही रोना ।

महण करना हा ता समयमें रह उत्कृष्ट गुणोंका
ही महण करना ।

पधानेकी अभिलाषा हो तो सदा षडु बातोंको
जीवनमें पधाना ।

पान करनेकी इच्छा हो तो जीवनमें
सदा सख प्रसुरी अमृतप्राणीका ही पान
करना ।

नृतनेकी तौघ छालसा हो ता सिर्फ धम धनका
ही संग नृतना ।

कुपित होना हो तो अपनम रहे क्रोधपर ही
मदा कुपित होना ।

अभिमाना घनना हो तो सदा धमाभिमाना
ही घनना ।

पाल-बाजी खले हो मदा माह राताक साथ
ही पालनानी खेलना ।

कुठ करनेकी तमना हो तो सभीका नष्ट
करना ।

घोलनेकी इच्छा हो तो सदा कन्दर कन्द
घनन ही घोलना ।

जलमूलमे किसीको नष्ट करने की इच्छा
हो तो सिर्फ कर्म दावुदा ही नष्ट करना ।

अहम् और ममकी मार,
 'मैं' किसीका नहीं और जगत
 मारपी प्रकाश ज्योति बताने,

अन्य किमाने दुर्गुण
 दुर्गुणको खोजनकी प्रवृत्ति
 शान है।

पुण्यको पुण्य तथा पा
 वृत्ति हृदयमें जागृत करे, या

'त्याग धर्मका अवलम्ब
 मुक्ति हुई नहीं जाती
 सिद्धांतम भ्रष्टा प्रकट कराय,

अगतभरणे तमाम
 सुखम है, लेकिन सर्वज्ञ क
 दुर्लभ है, सिद्धान्तमे
 मति देने, यही सच्चा ज्ञान

मग बिना न चढ ता धम-बधुआका संग
करना सदा जीवनम ।

व्यसन रख्यो ता मिर्फ दानका ही ।

दूर भागा तो सदा दुजनसे ही दूर भागना ।

अनुमोदन परा तो सदा धार्मिक क्रियाकाहों
काही अनुमादन करना ।

तैरना सीछो तो सदा ससार ममुद्रको तैरकर
पार करना ।

नामानिज्ञान मिटाना चाहो तो अधर्मका ही
नामानिज्ञान मिटा देना सदा अपने जीवनसे ।

प्रगति करना हो तो धर्मकार्यम ही करना ।

नाटकानलोकन करनेकी अभिलाषा हो तो
अपने ही ससार-नाटकना अलोकन करना ।

निदा किए बिना रहा न जाये तो सदा मर
स्वीकार करना ।

सोभ न सृष्टे तो धर्म धनका ही सदा सोन
करना ।

समद-वृत्ति का त्याग न कर सवा तो रीत का
देवदार भाषि सुनघनों का ही समद करना सदा
जीवनम ।

दरो तो पापम दरो ।

मयण करने की कालमा जागृत हो उठे तो
सदा धर्मकथा ही सुनना ।

वाचन करने की तीव्र इच्छा हो मनमें तो सदा
ऐसी पुरतकें पढ़ना जो तुम्हारे जीवनमें धर्म ओढ़
महा ह ।

उपरिष्ठ ही रहने हैं । हे चेतन ? यह सब पूर्वभक्तके पुण्यका ही प्रभाव है ।

५

✧

अनेमोका मोंगनेपर जल भी प्राप्त नहीं होता । जब कि तुम्हें बिना मोंगे दूध मिलता है । हे चेतन ? यह सब पूर्व भक्तके पुण्यका ही प्रभाव है ।

५

✧

इस पापी पेटर कारण जगतम अनकाकी छुर-छुर कर सलाम करनी पड़ती है, जब कि तुम्हें अनेक जन सलाम कर रहे हैं । हे चेतन ? यह सब पूर्व भक्त पुण्यका ही प्रभाव है ।

५

✧

मोह-मायासे प्रचुर ससारमें कित्यक मानव कदम कदमपर अन्धाकी ठाकर रा रहे हैं । जब कि तुम सपसे गौरव प्राप्त कर रह हा । हे चेतन ? यह सब पूर्वभक्त पुण्यका ही प्रभाव है ।

५

५

कित्यक सुगी समारकी डण्डा होनेपर भी एक भा सामग्री भीजू नहीं होती । जब कि

तुम्हें अगर किसी द्वारा की गयी अपनी निंदा
 पसन्द नहीं तो तुम्हें भी जवाब की निंदा करने का
 कोई अधिकार नहीं ।



दुश्मन के द्वारा तुम पर मिथ्या रूप में आने
 पर अगर तुम क्षणार्थमें स्थिर पीछे हट जाते हो
 तो तुम भी कभी किसी पर मिथ्या भय न करो ।



तुम्हारा कोई रहस्योद्घाटन होने पर अथवा
 चाल फैसले पर अगर तुम्हें अत्यधिक दुःख होता
 है तो तुम भी किसीका कभी रहस्योद्घाटन न
 करो ।



तुम्हारी कोई शिकायत करो, यह अगर तुम्हें
 पसन्द नहीं तो, भूलकर भी तुम कभी किसीकी
 शिकायत न करो ।



किसीके द्वारा किया गया विश्वासघात अगर
 तुम्हें नापसन्द है तो तुम्हें किसीका विश्वासघात
 करने का कोई अधिकार नहीं ।



तुम्हें प्राप्त सारी सुविधाओं को छीन लें, अगर यह तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो तुम खुद भी किसीकी सुविधा छिननकी कभी नीच प्रवृत्ति न दिखाओ ।



जिस तरह अगर कोई तुम्हें दुःख दर्दके गहरे गर्तमें धकेल दे यह कतई पसंद नहीं । ठीक उसी तरह तुम भी किसीको दुःख दर्दके गर्तमें धकेलनेकी काशिश ना करो ।



अगर कोई तुम्हारा अपमान (insult) करता है तब तुम्हारा मित्रान सातव आममानपर सवार हो जाना है तो तुम भा कभी किसीका अपमान करनेके लिए तत्पर न बनो ।



तुम्हारी इज्जत-भ्रतको जरा भी आंच लाने पर तुम अपराधीको लट्टू ले मारनेके लिए तैयार हो तो अचर्का इज्जनको घोरता पहुँचे तेमे शब्द कभी कहीं मन उन्धारा और न क्रियो ।

पाइ तुम्हारा इपा करे यह तुम्हें अगर
 चिह्न अन्टा नहीं लगता तो तुम्हें भी किसी
 के प्रति इपा रखनकी प्रवृत्ति। जीवनमें सज्ज
 मूलसे उगाटना होगा ।

तुम्हारा युग हो लै तो प्र-ति अगर कोई
 रखता है यह तुम्हें चिह्न पसद नहीं तो फिर
 तुम्हें भा, जान भल चला जाय ऐतिन कभी
 किसीका घुरा करने हेतु कमर नहीं पसनी
 चाहिये ।

तुम्हें अपनी चिदगी जितनी प्यारी है
 ठीक उसी तरह जे वको भी अपनी चिदगी उतनी
 ही प्यारा होती है । अतः कभी भूलकर भी
 किसीका जीवनको नष्टप्राय करनेकी अधमप्रवृत्ति को
 अपने जीवनमें स्थान मत दो ।

संक्षेपमें

बहनेका यह तात्पर्य है कि जो घतोर तुम
 सुदको पसद नहीं यह घतोर दूसराके प्रति मत
 परो । ज्यादा धर्म अगर तुम न कर सको मगर
 इतना करोगे तो भी काफी है ।

चिनगारियाँ

सच्चा योद्धा—वही जो पाँचों इन्द्रियोंपर
विजय प्राप्त करे ।



सच्चा पंडित—वही जो सचे धर्मकी आराधना
करे तथा उसे जीवनमें उतारे ।



यत्ना—वही जो सदा सत्यका ही रंग
मन परसे सर्वत्र जयघोष कर ।



दानेश्वरी—वही जो विश्वके सर्व प्राणियोंको
अभयदान प्रदान करे ।



बुद्धिका फल—वही जो सत्य-वर्णोंके अंतमें
सबसे भागद रस बहा दे ।



मन्त्रा मार-प्रहा जीवनका जो हमें इस दहमें
अत पचचराण धारण कर सके ।

अन्धको ज्ञान अर्पण करना यही ज्ञानोपार्जन
का सच्चा मम है ।

निर्वह निर्धनका सरक्षण करना यही शक्ति
धारण करनेका अर्थ है ।

धम विहीनता यही हमारी मर्च्यी दृष्टिता ।

सुदेव, सुगुरु तथा सुधर्ममें अचल भटल
श्रद्धा यही जीवनकी सची संपत्ति ।

असतोप-लोभ यही हमारा सचा दुःख ।

जीवनमें अन्धा जमा धैठी तस्कर व जार वृत्ति
यही हमारे जीवनकी सबसे बड़ी मलिनता ।

सम्यग्ज्ञान-अर्पण करना, यही सच्चा दान ।

अति विषट्क परिस्थितिमें भी न्याय-मार्ग पर चलित हुए बिना रुटे रहना-यही सच्ची धैर्य शक्ति ।

✽ ✽

राग और द्वेष यही दोनों आत्माके साथे शत्रु ।

✽ ✽

गुरु मिलन योग होते हुए भी जो गुरु ध्यान भवण कर, अपनासो पावन करना नहीं चाहता, यही सच्चा सूर्य ।

• ✽

अपकार-करनेवाले पर भी उपकार करना यही सच्ची सन्नता ।

✽ ✽

रात और दिनभर नित विषय शक्तिमें रत रहनेवाला ही मन्त्रा अध ।

✽ ✽

दुमरोंकी निंदा करनेवाला ही सच्चा धोबी ।



अन्यके गुणोंकी स्तुति कर, जीवनमें ग्रहण करनेकी श्रुति रखनेवाला तथा अपनेमें रहे अथ गुणोंकी निंदा करनेवाला ही सच्चा दृष्टा ।



विषेक तथा विनयहीन मानव ही सच्चा पशु ।



षष्ठल रक्ष्मीना मुले हाथों सदुपयोग करना ही सपत्ति-प्राप्तिकी सच्ची मद्द्ता ।



रोगियोंके रोगको जटमूलसे सच्छेदन करनेकी प्रश्रुतिसे बेफिक्र रह, अगणित धन सपत्तिसे अपना घर भरनेवाला वैद्य चिकित्सक [Doctor] ही सच्चा समराज ।



स्वपदाथको अन्यकी तथा अन्यके पदार्थको अपना मानना ही सच्ची अज्ञान श्रुति ।



आत्मा में रहा और अज्ञान ही मायस (अमायस्या) का सचा अधिकार ।



विषय-कामादिक लुब्धकाको मिटानेवाली प्रभु बीतराग देवकी धाणी ही सच्चा अह ।



हज्जटानुसार अपनी धन संपत्तिको सुमार्गपर खर्च करनेवाला ही धनका सच्चा माडिक ।



परनिदा करनेवाला मिथ्या आश्रय स्मनवाळा और अन्यक रहस्यका भङ्गापाट करनेवाला ही मरुचा चाडाल ।



सत्य धारणा, सपथ्या करना, इन्द्रियाका निग्रह करना और प्राणिमात्रके प्रति दयावृत्ति रखना यही मन्त्र्या शौच किया ।



विषय वपायामिमें अहमिज्ञ बलता आत्माको बचानेवाळा ही सच्चा उपकारी (उपकारक) ।



जन्म और मृत्युर्षी दो महारोगोंका जहाँ
जड़मूलो-उद्गम होना हो, यही सच्ची अस्पताल
(Hospital) ।

✦ ✧

अच्छो सनानेकी दुः इच्छा ही हमारी
सच्ची पुर्जना ।

✧ ✧

ममय जानेपर भी सत्य न बोल, हमेशा
मीठा बोल, सुशामन बगनेकी आदत ही सही
सुशामन-वृत्त ।

✧

अपना तथा ममय मिलनेपर अन्यका
फलयाण साधनकी समझा ही सही माधुरा ।

✧ ✧

अष्टरमवे आरणसे हँकी आत्माको मुक्ति
दिलाना ही सही स्वराज्य ।

✧ ✧

चतुर्गतिरूप विश्व ही सया कारागृह [Jail] ।

✧ ✧

हित शिक्षा सुननकी इच्छा न रखनेवाला ही
मन्चा घट्टा [बाधिर] ।



दुर्गातिष्ठ गहरे गनर्म गिरन जीयाको बघाने
वाला ही मन्चा धर्म ।



पिता गुल्य बन प्रनारा मरक्षण करे एही
मन्चा राधा ।



विपत्ति नदी मुदिरलियाक समय जो महायता
न, उही मन्चा मित्र ।



कमल मनत्रुत बघनाही लोहनेमे समथ अमा
थहा तत्र मन्चा शत्रु ।



अपने स्वावर लिण अन्धके हिनको छिप्रभिन्न
करनेवाला हा मन्चा गानन ।



समस्त-समयमें भी अधमकार्य न करनेकी
प्रति रचना ही सच्ची कुटीरता ।



अपने सनातनके आत्मादितरी रात दिन बिठा
करनेवाला ही महा पादक ।



जो मुख्य जीवनमें आनेके पञ्चानु सभी कार्य
मही यही मर्यादा मुख्य ।



आत्माके गर्भमें छिपे अनन्त गुण मंदातोंकी
शोधकर प्रकट कर यही सच्चा विज्ञान ।



दिन प्रतिदिन नित्य ही आत्माको धर्म मार्ग-
पर आगे और आगे-बूझ करनेके छिपे किया जाने
वाला प्रयत्न यही सच्ची प्रगति ।



(८१)

संसारद्वीप समुद्रके प्रचंड तूफानमें अस्थिर हो
जीवन नैयाबो, डोळती घाम, मुक्ति किनार
दिखाने वही सच्चा भागी ।

✧ ✧

दृष्ट्या और लोभवृत्ति ये दोनों ही जगतके
प्राजियोंको ठहरान करनेवालों सभी विज्ञानिनिष्ठा

✧ ✧

मोहसे तेरा कमाया
धन क्यों यह आयगा
प्रेममें अति पुष्ट किया
तन जलाया जायगा ।

गु आचार्य देवेन्द्रजी
विश्व लाल गुरीश्वरजी महाराज

कटु सत्य

पार्षणी धनित्यत पाप प्रचारक ही बहुत रतना-
नाश है । पापी ता मिय अपना ही आत्मनाश
करता है लेकिन पाप प्रचारक ता अनय भोली
आत्माआओ दुगतिक गहर कुपमें दकेलता है ।



मूर्ति भक्तर्षी धनित्यत मूर्तिप्रति प्रति लोगोमें
रहे सखिधारोना गन्ध कानेवाले ही ग्यान
अपरार्थी है ।



पापस्थानम अगर विसीवी धैराग्य भावना
व्यक्त हो जाय तो उसके लिए सयोगवशात्
यसी ही भवितव्यता, पूव भक्तके सुमस्कार
तथा सम्यग्ज्ञान हा पूजरूपमें आभारी हैं । लेकिन
पापस्थान तो एकार्गीरु लिए मिलकुल त्याग है ।



किसी प्रकारके गन्ठ (गुट्ट) पक्ष अथवा पार्टीका हमें विलुप्त मोह नहीं-बचन नहीं। ऐसा ध्यानगाले सब प्रस्ता भी एक प्रकारकी पार्टीसि ही समाहित हैं। और एक प्रकारके पक्षके भी हैं।

* ✽

यम यह विश्वके लिए परम नुस्सानकारक पद है जो कहनेवाले और लिखनेवाले केवल मध्यस्थी विषमग्रसे पीडित निरुष्ट फोटिक रागाई

* ✽

निस युगमें गच्छता और विषम प्रचारक अनेक दुष्प्रयोगा माधनोद्योग्य जाता है उस युगमें धमके बधनों व निरुष्ट और फटे [मन्त्रुत] बनानेकी लक्षण व्यवस्था है। उन बधनोंकी शिर्षा लक्षण लक्षण गच्छतापोषक है।

* ✽

पुरातन कार्त्तिक इतिहास लक्षण तथा मंशोधनकारका, 'मै यों' — 'करोसि

आया ' ' कहीं जाऊंगा-मरा परिभ्रमण किम
कारणवश है । ' आदि अपने इतिहासकी भी
शोध व मशोधन करना जरूरी है ।



जिम तरह माथवाला बैल कहलाना है और
बिगर माथका सोंद । ठीक उसी तरह नाबक
बिना दुफ्फी और अशुद्ध बगैर समूह भी
सोंदके समानही है ।



किसी चीजकी कमी अथवा गरजमद मादक
की आवश्यकताका दुरुपयोग कर चीजें मुँद
मागे दाम धबना यह भी एक प्रकारकी अनीतिही
है ।



मुनिश नाम आर पापारके इच्छुकका उसके
अनुगुण गुण चारित्र तथा शक्य आशाके पाठनका
मोह भी रखना चाहिये ।



बराई पचायत करनेम आनतक तूने अपने
जीवनमें बहुत कुछ सोचा है । लेकिन पूर्वभरके
शुभ कर्मोदयमें प्राप्त आत्म पचायत करनेकी घड़ी

को अब तो समझदार बन मत गयाओ ।

✽ ✽

रामराज्य स्थापन करनकी मर्माषा रखने
 बासाओ सदस्यों, लाखों वर्षों पइली पुरातनकालीन
 सस्कृति अपनानी पढ़गी और आजकी नूतन
 सस्कृतिसे समथ विच्छेद करना होगा ।

✽ ✽

इस लोकमेंते परलोकमें तथा परलोकमेंते
 अथलोकमें परिभ्रमण करनेवाली आत्माआकी
 परिभ्रमण क्रिया निरंतर बँद होनेकी सही राह
 सुझानेवाले ही सही लोक सेवा कर रहे हैं ।

सदाचार और दुराचार

सदाचार यह बहुमुख्यदान ऊँचा जातिका सुगण है जब कि दुराचार सिर्फ लाहामात्र है ।



सदाचार यह स्वर्ग-भक्ति की एकमात्र चार्नी है जब कि दुराचार यह नरक का मुख्य द्वार ।



सदाचार सुगंध का भंडार है जब कि दुराचार यह दुःख दर्द का आश्रयस्थान एक बड़ा पर्वत ।



सदाचार यह निरंतर जगमगाती प्रखर उद्योति शिरसा है जब कि दुराचार मावस की तिमिरा छन मथानक रात्रि ।



सदाचार यह वंशपरम्परागत चली आयी सच्चा ऐश्वर्य जहो नछाली है जन्म कि दुराचार ता निरि हरिता मात्र है ।

सदाचार यह सच्चा भूषण है, जन्म कि दुराचार यह निरा दूषण है हमारे जीवनका ।

सदाचार यह अलौकिक दैवी जीवन है, जन्म कि दुराचार सिर्फ पशु जीवन मात्र है ।

सदाचार यह सम्मान-वश कीर्तिना सुवायुष्टि है जन्म कि दुराचार यह अपमानरूप धृतीकी धर्या मात्र है ।

सदाचार यही सच्ची विद्वत्ता जन्म कि दुराचार यह नीरि अज्ञानता ।

सदाचार यह हमारे जीवनका सच्चा गृहार है, जन्म कि दुराचार यह जीवनको क्षणभरमें भस्मीभूत कर देनेवाला एक भयकर शोला [अगार] ।

सदाचार यह उच्चरित्व एक अभ्युदयान
(steamer) है जब कि दुराचार यह उच्छिष्ट
नौका मान है ।

✧ ✧

सदाचार यह विश्वका सबसे बड़ा रक्षक है
जब कि दुराचार यह सबसे बड़ा भक्षक ।

✧ ✧

सदाचार यह जीवनकी सयमे बड़ी सम्पत्ति
है जब कि दुराचार यह सबसे बड़ी दुष्पत्ति ।

✧ ✧

सदाचार यह सद्गतिमें स जागृताही सबसे
बड़ी सुन्दर मजबूत सहाय है जब कि दुराचार यह
दुर्गतिकी सबसे गहरी ग्राह [घाटी]

✧ ✧

सदाचार यह जीवनका सबसे बड़ा मित्र है
जब कि दुराचार यह बुरा शत्रु ।

✧ ✧

सदाचार यही सही मानवता जब कि दुराचार
बुरा ही मानवताका बीजम मात्र है ।

यह भी पढ़िये

वैराग्यका सबंध सिर्फ आयुने साथ नहीं बल्कि पूर्वजन्ममें ज्ञापित पुण्य-कृत्यों तथा इस जन्ममें हमने धर्मिष्ठ और सुसरूढ़ परिवार द्वारा नित्य प्रति संधि गय सुसस्कारक साथ है ।



कित्थेक बरसोंमें व्यनहार-कुशलता, होशियारी प्रतिभा तथा हानि जबाबी आदि निम्न शक्ति-बोके दर्शन होते हैं उनके दर्शन वृद्ध तथा युवक वर्गमें भी कभी नहीं होते ।



Once failure is half success यानि एक बार किसी भी कार्यमें असफलता प्राप्त मानव अर्ध विजयी माना जाता है-कदाचितानुसार वैराग्य प्राप्तिके पश्चात् पतित हुये मानवको भी आधी सफलता तो प्राप्त हो जाती है । अल्पाशम ९

दिनय दिला बली आनयार्थ धार्मिक प्रवृत्ति
भी पुनः अशोभित सहायनीय है ।



घोर अपकार अथवा प्रखर प्रकाशमें जान
भनवान घर या बाहर जानेम आया
अमृत निग रगनका हा कार्य निरन्तर करता
है । ठीक जमी प्रकार चिन्ती भी कारणवश
अतिकार की दृष्टी त्याग पुनि लाभदायक
होती है ।



चिरिन्मक (Doctor) के कायमें धारादा, (1 leader) की तथा भाराशागाके कायमें
चिरित्सक मदादयका सहाइ याभा सत्य ना
रगती । ठीक वसी सगह धमतत्रम दशनायकाकी
तथा शामनतत्रमें धार्मिक नेताओंकी सहाइ
विश्वकुल व्यर्थ है ।



दिना अमत्य, चोरी अनति, व्यभिचारादि
भयानक अपराधोंम सग मानय समुदायको, जिन

माधुगण त्रिना कोअी मूल्य लिये भयकर अपराधा
 से सदा फोसों दूर रहनेका निश्चाय उपदेशामृत
 पगनेरा रात्र दिन अत्रिधाम प्रय न करते हैं ।
 आर विश्वम क्वाति तथा कुशासन स्थापित
 परनेमें उनका मन्त्रसे बड़ा हाथ है यह बात
 भूलने जैसी नहीं ।

मोषानपरसे बच्चोंके नाचे गिर जानेके भयवश
 उस दूर हटानेके बदले बच्चोंको ही समझकर बड़ने,
 की मलाह दी जायें । जैसे भयभीत हो शरारपरक
 बस्त्रको उतार फेंका न जायें बल्कि स्वच्छता
 और साफ सफाईकी ओर अधिक ध्यान दिया
 जायें । ठीक उसी तरह पतन होनेके डरसे धर्मको
 जीवनसे दूर किया न जायें, बल्कि पतितावस्था
 की जड़का उच्छेदन किया जायें ।

कल्याण के पथपर

मुक्ति को प्राप्त किए बिना संपूर्ण और शाश्वत
सुख हम समारमें और पड़ी नहीं मिलता ।

२ २५

निमल बनाना चाहे आत्मा को, शरीर का
निमल बनाने से आत्मा को कोई लाभ नहीं होता ।

२ २५

राजा — महाराजादि सभी इस पृथ्वी को ठोड
समय के साथ चले गए, लेकिन पृथ्वी किसी के
साथ नहीं गई जो तेरे साथ आयगी क्या ?

२ २५

जर, जमीन, और जोर ये तीनों ठेसके ठोस
हैं इन तीनों परसे जब हमारा जी ऊठ जायगा तब
हमारे में ठेसका तामोनिशान न रहेगा ।

✦ ✧

श्री तीर्थकर परमात्माकी अविरत सेवामें हा
हमें मोक्षका मीठा मेवा हासिल होगा ।

५ ५

मन चित्तका मैला है और तन कचला, मम
इसीका विश्वास भूछूट भी न करो ।

✽ ✽

हितके शत्रु श्रमण नहीं करनेपाछे हा मरे
बधीर है । वृत्त जीवनको कभी सफल नहीं बना
सकते ।

✽ ✽

मान तो आत्माका कट्टर शत्रु है, निष्कंठ हट्ट
पलीनीके केवल ज्ञान प्राप्तिमें रुकावट है

५ ५

विनय धर्मका मूल है, मूल नहीं हट्टे हट्टे हट्टे
हैंक उसी तरह जहाँ विनय हट्टे हट्टे हट्टे
दुमरे गुण होंगे भी कैसे ।

✽ ✽

नम आर मरण य नो ही ममायक मूल गग
हैं जत मय गगावा पुनतया उगभा कर, इन
दानावा नदमूळसे उग्रादनका काशित्त धानी
पादित ।

यति धमका पालन आर तुममे न धन मक
ता गृहस्थ धमका अनुमरण कर मानव जमको
नरा तो नफल कर दा ।

नीतिनया मुग्ध ध्ययव उदय मोक्ष प्राप्तीही
है । अन्य उदय इसक बाट दे पहल मही ।

मनपर विनय पाना बहुतही कटीन है ।
तकिन निमन उमपर विनय प्राप्त कर ली है,
उमने सबपर विनय टाहित कर ली है ।

हाट हजली और हीन उन्नतिका प्रतीक नहीं
धन्य अपनतिका गहरा खनू ह जिसम गिरनके
बाट मानव पुन ऊपर मुदिल्लस आ मकता है ।

राम राज्य बनानेकी तेरी मनीषा हो तो हे
 'पाव' रामचन्द्रजीका 'व्याय, नीति, विनय, मातृभुव-
 घमपरायणता, आदि गुणोंका अपनाना 'चाहिए' ।



जड़यात्राका तूफान अगिरा बिज्रपर छा जाना
 चाहता है , अतः उसे रोकनेके लिए आवश्यक
 अमोघ शस्त्र मम चैतन्ययात्री श्रुति हेतु, तन
 मन धनसे प्रयत्न करना चाहिए ।

इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

— सुनिराज भीमदिमापिञ्जरी

✧ ✧

मानवभव प्राप्त हुआ, यह तो ठीक, लेकिन नमस्का दूमरोके हेतु उपयोग रितना हुआ ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

✧ ✧

पीतराग भगवान जैसे सुदेशकी प्राप्ति हुई तो अक्षय, लेकिन उनकी पूजा अर्चना करनेका याग दिवना मिला और आदेशका जीवनमें पालन पितना किया ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

-

अगुरु पदार्थ युग अथवा अष्टा यह बात तो अच्छी तरहसे समझमें आ गई । लेकिन सुदेश कीन और कुदेश कीन ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

✧ ✧

मुनिपदवी महत्ता जान लेनाक बधात नमकी
मेवा सुश्रुता न हो तो गैर, लेकिन हमें नमकी
अवहेलना [आशानना] क्यों करनी चाहिए ?
इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

✧ ✧

धर्मरु मर्म [गहस्य] को अच्छा तरह समझे
बिना - धर्म ही उसमें टांग क्यों अटानी चाहिए ?
इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

✧

धर्म करनेसे कितने लाभ होते हैं - धर्म
से कितना नुकसान होता है ? इस बारेमें कभी
सोचा भी है ?

✧ ✧

आजकल बिनासो पातागन्धर्व (अस-
मय प्रवृत्तियोंमें रत रहनेवाला) कभी कभी
समय आनेपर धर्म विद्याशास्त्र लिखना बंदी
करता। ता मर जैसे पानक कच्चे दिम प्रहर
का मुजिलियों आता है। इस बारेमें कभी
सोचा भी है ?

✧ ✧

अनुल राजकुद्विष रामो कितन नम्र दिनयी
तथा निराभिमाना हाते हैं-लज्जित मेरे जैसा
फरफड़ मन्त फरार अपनी अहम् भावनाका क्यों
मही छाड़ता ? इस धारम कभी मोचा भी है ?

१

अगर कोई मरा जराभी भा निंदा करता है,
ता मैं ब्यथहीम मारे काधक पागल हो जाता हूँ
ता मुझे फिर ममराजी निंदा क्या करनी चाहिए ?
मम धारम कभी मोचा भी है !

✽ ✽

मेरे य होना चम्पु वन् हा पानके पञ्चान् यहाँकी
सर कद्वि मिद्वि यहीपर रह जानेवाली हैं ।
ता फिर मुझे ' मैं और मेरा ' के नशमें
हैंस ब्यथहीम मुसीबत क्यों माल लनी चाहिए !
मम धारम कभी मोचा भी है ?

१ २ ३

मृत्यु यह अनादि अनन्त कालमें चली आती
एक आमिट कटुसत्य है तो फिर मैंने मसार

मागका पार करन, तथा शिष्य मुन्त्रीसे विवाहक
परिग्र गठ बधनमें बधन हेतु आनतक क्या क्या
किया ? इस धारमें क्या साध भी है ?



गहूँ तथा कण्ड-पत्थरके मिश्रणमेंसे मैं गेहूँआ
का गन्ध कण्ड पत्थर फेंक दता हूँ, ता १५२ अनेक
गुणोत्तम गुणको क्या ग्रहण करता हूँ ? इस
में क्या नाश भी है ।



पालक, जो तुल्य कहत हैं, मर दितक लिंग ही
होता है तो फिर उनकी शिक्षापर मुझे मोघ क्या
करना चाहिये ? इस धारमें क्या साध भी है ?



मानव जन्मभी महत्ता त्यागमेही सर्ररी
निहात है तो फिर उसे विषय विकारादिमें फँस
करा व्यर्थहीमें गुमाना चाहिये । इस धारमें कभी
मोचा भी है ?



प्राचीन समयानुसार आजकल मनातनी श्रमणों
[साधु] का दर्शन नहीं होता ठीक वैसा ही

सनातना श्रावण भी क्यों मिलते हैं ? इस बार
कभी साचा भी है ?



तप तप धम ध्यानादि त्रियाकांठ ता बहुत
किए, लेकिन मारे मैल्फो हटानेका कितना प्रयत्न
किया ? इस बारम कभी साचा भा है ?



नियम इदममे हमशा धम बसा रहता है उस
का दयगण भा घदन करत हैं ? ता धम खितन
अष्ट है । इस बारम कभी सोचा भी है ?



दुनियाक अन्य कम व काय सपन्न करते
समय तू अपने मनको स्थिर दृढ़ रखता है, ता
कि धर्मशास्त्रोंमें उने क्यों निर्बल बनाता है ?
इस बारम कभी सोचा भी है ?



ना जौलानी अधता [अधप्रति] जीवनका
कितना नुकसान नहीं करती है उसम कभी उपाय

अज्ञानकी अधता [अवधृति] नुस्सान करता है ? इस बारेमें कभी सोचा भा है ?

विषय लिप्षामें आनन्द ता स्वर्गका प्राप्त होता है लेकिन उसका दुष्परिणाम कितना होता है ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

घेर पुत्र पौत्र प्रपात्राणि भरपेट भोजन करें तथा आरामसे रह सक इतनी अतुल सम्पत्ति तू इकट्ठी कर रहा है, लेकिन जन्म मरणकी बेडीर बधन कितने ता मजबूत हो रहे हैं, इसका स्वप्नम भी कभी विचार किया है ?

✧ ✧
अगर नहीं किया हो तो आनमे ही जग्ने लगे !

माहिमा कहानी

(सुनो मुना टे दुनियावालों— पाव)

सुनो मुना प्रयाण शिष्य औ गुरु माहिमा की धाम कहान
सत्य प्रेम औ दया दानका नित बहाते ये पा
मुना मुने प्रयाण शिष्य

गुजर देशके शहर मुरतमें मातीचदन जन्म छि
शेठ जचद औ माँ नमवतीकी, गादको भिसने पत्रि कि
पाया शेठने पुत्र एक विनु शासनको मितारा मि
जमवतीकी गोद भरी औ ओसनाल पुलमें दीप ज
कन्नीमसौ पासठ सालका माद भाद्रपद सबको भा
घदी द्वादशी लेकर जमर, सबको भिसने हरसा
सभी मिल अद्वामय बन हम उनको शीश सुकाते
जेक स्वरमें बयबाप कर गीत ऊन्हींके गाते
सुनो मुना प्रयाण शि

(१०३)

[२]

हजार अथवा ठोड गुरुजें यौननागन में प्रवेश किया
 धर्म ध्यान मय बनके मन मात विताका गुण किया
 ज्ञात वर्षकी कामल धयम, मुना हविस्सूरिष
 नाम धद

धर्म ध्यानमें हुआ लीन चर,हर फिर सनस्य रहा
 वैज्य भगमें भगा दिवाना जा प्रवीण चंगम रहा रहा
 शिक्षा मार्गी धन सुन धशाएना, उठधीरा वह अहा रहा
 माया-माह सत्र दूर हजे, औ घरकी ममदा छुड पही
 हाथरम दीक्षा पाकर, गैथा नुमन प्रेम लही
 यह महान् पद मिला, न निनरा रुनियामें काशा माना
 मुना सना प्रमाण शिष्य औ माहिमा गुरुना वरम कहानी

[३]

सूयपुत्रसे निरल गुरुभीने, अकलेश्वरमें प्रवेश किया
 तष्ट मुदधी गुम दशमाको, वही शिक्षा उत्मन किया
 हर्षित हाकरसुरिजने तुमरा, माहिमात्रिनयनी नाम दिया
 औ पुलकित हो गुरु प्रवीणने, अपना तुम्ह शिष्य किया
 पचमहावतधारी गुरुजी, बाल - ब्रह्मचारी कहलाये
 नास्तिकने भी आस्तिक बनके, माहिमा गुरुके ॐ /

सुरत कपटवन स्वभातका गुग्गुरका घाणा भाजा
 अहमन्नगर सगमनेर तलेगाँवने गुग्गुरकी माहिमा गात्री
 आदिरे नगरान पोमासेम आत्मकमलकी हाँ ध जानी
 सुनो सुनो प्रवीण शिष्य ओ माहिमा गुग्गुका धरम कहानी

[४]

पथीत धर्पस नगर डगरमें, अमृतवाणी सुम परसावे।
 माहिमा गुरु गुरुभाई तुम्हारे, सुशील पूना डर नित भाते
 महाभाग्य तुम महान् आत्मा, प्रवीण शिष्य ओ कहलाये।
 छवि सुरिणी शुभ निशामें, धर्मज्योति नित प्रगटाय
 छलित मर्दमको भक्ति देके मुक्ति मार्ग तूने बतलाया
 'रजनको' भी धर्म हेम दो चरणमें तेरे यह आया
 पा आशिष गुरुवर तेरी नित 'दीप कमल' दिल लहराय
 सुनो सुनो प्रवीण शिष्य ओ माहिमा गुग्गुका धरम कहानी

जैन धर्मके विषयमें

जगन्निवात रिचारकोकी सम्मतियाँ



प्रधान मन्त्र प जवाहरलाल नेहरू

[डिस्ट्रिक्टरी ऑफ इंडिया]

हिंदू संस्कृति भारतीय संस्कृति का ही एक अंश है । जैन या बुद्ध पूर्ण नागसे आरंभ हुए हैं लेकिन वे हिंदू नहीं हैं ।

स्व लोकमान्य तिलक

महान्नीर स्वामीजीने जैनधर्मका पुनर्जागरण किया । वे २५ वें अवतार थे । जिस अवतारके पहले भी जैन धर्म प्रचारमें था । इस बातसे जैन धर्मकी प्राचीनता सिद्ध होता है ।

जी जे आ करलोग

जैन धर्मकी स्थापना, गुरुघात जन्म कब हुआ
इसका पता लगाना असंभव है । हिंदुस्थानके
धर्मात्मक जैन धर्म सचस्य प्रार्थन है

हैं हमने याकारी जेम् जेम् वा गे- ही

जैनधर्म पूरे तौरसे स्वतन्त्र धर्म है । इस धर्मन
हमारे किसी धर्मका अनुकरण या नकल नहीं की
है ।

हैं सतीशचन्द्र प्रिंसिपॉल सहित डॉलेन,
बलकृष्ण

प्राचीन दर्शनके पहले ही जैनधर्म प्रचारमें था,
इसके बारेमें मेरे मनमें शक भी इक नहीं है ।
सृष्टिक आरम्भसे ही जैनधर्म प्रचारमें है । जैनधर्म
और सृष्टि इनकी गुरुघात एक साथ ही हुआ है ।

प्रो मैक्समुल्लर-मोसमुल्लर

जैनधर्म हिंदूधर्मसे बिल्कुल भिन्न और स्वतन्त्र
धर्म है ।

डॉ० राजेंद्रप्रसाद सच्चपनि

श्री महावीरजीके उपदेशके अनुसार चर्चनेमें शांति प्राप्त हो सकेगी । जिस महापुरुषने यथायं मार्गपर चढ़नेमें हम पूर्ण शांति प्राप्त कर सकेंगे । आन्के मधुपमय और अज्ञान सत्तारमें जिस साधु पुरुषके उपदेशके अनुसार चढ़नेमें शांति प्राप्त हो सकेगी ।

सब अकबर हैदरी

श्री पृ० राज्यपाल, आसाम प्रदेश

महावीरजी सन् संदेश हमारे हृदयमें विश्व धर्मरक्षा शङ्कनाद करता है ।

श्री ग० वा० मारुणकर

अध्यक्ष, भारतीय मसद्

अहिंसा, दया और प्रेमके आधार पर एक विश्वधर्मकी स्थापना करना— जैनधर्म व्यवस्था महावीरजीका उद्देश्य था ।

ग० कमलमोहण रानींद्रनाथ टागोर

धर्म यानी सामानिज रूढ़ी नहीं — ऐसी आचार्य महावीरजीन भारतक कोने कोनेमें बुलन्द की । धर्म यानी मत्स्य । मानवधर्म य धर्म हममें स्थूल रूपमें परस्परानति पैदा । किसी भी प्रकारकी विविधता नहीं ।

इपिग्निल गुयाज़टियर ऑफ इटिया [१४ ५४]

घाट धम मर्यापक गौतम बुद्धके पदर जैन धर्मक अर्थ २३ सार्थकर हो गये थे ।

टी डब्ल्यू राईस डेव्हिड

जैनधर्म या घाट धमकी अवस्था भी प्राचीन है, इसमें फाजो सन्देह नहीं ।

टी राधाकृष्ण, उपरान्त

[भारतीय सच राख्य]

अधन पूर्व हा गये २३ महर्षि अधरा तीर्थ करा द्वारा १, य गये २५ द्वारा परम्परा धर्म मानन आग पराजा । पुनामनस चले आये सिद्धान्तोंके ये प्रचलन य प्रचारक थे । ये किसी भी नूतन विचार प्रणाली मप्रणय अधरा उनके सस्थापक न थे । इसकी मन् के पूर्व कश्यपभद्रके अमर्य उपामक थे । हम सत्त्वका भिन्न परत अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं । मास यन्त्र यदि में भी तीर्थकराको मान्यता न गयी है ।

प्रा हरिमित्य भट्टाचार्य

जैन सस्कृति यह माननीय सस्कृति है । जैन-दर्शन वैदिक दर्शन है, ' जिन ' के चमत्कारों से ही देव न थे । वे अपनी कृत्यशक्ति से ' जिन ' बने हुए ।

कनेल टॉड

भारतवर्षके प्राचीन इतिहासमें जैन धर्मने अपना नाम अचगम्य रखा है ।

प राममिश्रजी आचार्य, रामानुज संप्रदाय

स्याद्वाद यह जैनधर्मका अभेद्य दुर्ग है । इस दुर्गमें बादी और प्रतिवादीके मायामय गोलोंका प्रवेश नहीं होता । वेदात आदि अन्य दर्शन शास्त्रोंके पूर्व भी जैनधर्म अस्तित्वमें था, उस पारमें मुने रत्तीभर भी मंथन नहीं ।

डॉ ए गिर्नोट, फ्रान्स

जैनधर्मद्वारा प्रतिपादित चारम्य मान्य जीवनका उन्नतिभी नष्टम रहितता आभ्यास य

हितकारी है। यह धर्म अनेक प्रकारसे साधा-
सारा, सनत और मौल्यवान धर्म है। प्रगल्भ
प्रमाण धर्मस्य यः धर्म सर्वस्वी मित्र है। ठीक
उसी तरह चाद्व धर्मोनुसार यह धर्म नास्तिक भी
नहीं।

हैं जास हटल, नमनी

जैनधर्म तथा जैनाचार्योके उपदेशमें अनेक
नियम व उपायिचार कहे कहे भर पड़े हैं। यह
अपन देशधुआँका दिया रहा है। गौद्धधर्मोय
साहित्यक धानस्यत जैन धर्मोय साहित्य अरु
नहीं है। जैनधर्म तथा जैन साहित्य विषये
जो जो मेरी जानकारी पड़ती गयी त्यों त्यों
अपने हृदयमें उसका प्रति प्राप्ति हुआ वैसे-वैसे
है।

सरदार गल्लममार्ग देते

[मू ५ गृहमयी, मन्त्रमन्त्र]

जैनोकी आद्य संप्रदाय अनेक अनेक
विशेष है वही धर्माचार व अनेक अनेक
विशेष वही धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म
धर्म, अर्थात् मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र धर्मोय धर्मोय धर्मोय धर्मोय धर्मोय

— १५ —

श्री परमारकी अन्य रचनाये

संयन भमद

१ उगोतपूत्र	२ आन
२ रमवान	२॥
३ भद्राङ्ग	५
४ कप्यना	८

अनुनादिन माहित्य

- ५ भागमगा—(ले प आचार्यभा जनुमूर्तिपरमा)
- ६ प्राथमा—(ले प वर्यामर्भा भद्रकर विजयर्भा)
- ७ दाप तमावी महार्यार—(ले व मुल्लामर्जा)
- ८ तमा प्रथाम—(रय सान मुल्लामर्जा)
- ९ सप्राठ भमिष—(भी समधर म मरर)

मौलिय अप्रकाशित

- १० जयवकाश — जारा तारिष
- ११ पन्थोके सरदार — , काव्यमे
- १२ रत्न मनुषा — नाटिका
- १३ आनका समाच — नाटिका
- १४ अमला — (लेगक—कु कमाग पॉल व
रय परमार)

प्रातिस्थान

श्री भभूतमल त्रिलोकचद अिन ॥
३११ रविवार पठ, पूना २

